# पादरियों ने अपनाया इस्लाम

इस्लाम कुबूल करने वाले ग्यारह ईसाई पादरियों और धर्मप्रचारकों की दास्तानें

मुहम्मद चाँद

कृपाशील, दयावान ईश्वर के नाम से

# उनके नाम जो
# जुटे हैं
# सच को तलाशने में

**E BOOK**
**By**
**www.islamicwebdunia.com**

# पादरियों ने अपनाया इस्लाम

## ईसाईयत छोड़कर इस्लाम कुबूल करने वाले ग्यारह ईसाई पादरियों और धर्मप्रचारकों की दास्तानें


संकलन
अनुवाद
संपादन

मुहम्मद चाँद

# विषय-सूची

कृपाशील, दयावान ईश्वर के नाम से

## दो शब्द

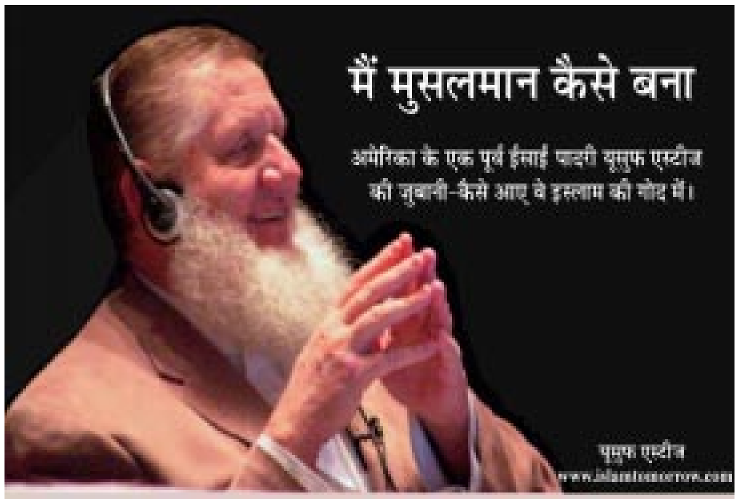
**तुम ईमान वालों का दुश्मन सब लोगों से बढकर यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ईमान वालों के लिए मित्रता में सबसे निकट उन लोगों को पाओगे जिन्होंने कहा कि -हम ईसाई हैं। यह इस कारण कि ईसाईयों में बहुत से धर्मज्ञाता और संसार त्यागी संत पाए जाते हैं। और इस कारण कि वे अहंकार नहीं करते। जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि उनकी आखें आंसुओं से छलकने लगती हैं । इसका कारण यह है कि उन्होंने सच्चाई को पहचान लिया है। वे कहते हैं-हमारे रब, हम ईमान ले आए। इसलिए तू हमारा नाम गवाही देने वालों में लिख ले। ( 5 : 82-83 )**

तकरीबन चौदह सौ साल पहले अवतरित कुरआन की ये आयतें आज भी प्रासंगिक और सामयिक हैं। आम ईसाई ही नहीं बल्कि ईसाई पादरियों और धर्मप्रचारकों का बड़ी तादाद में इस्लाम को गले लगाना कुरआन की इन आयतों को खरी और प्रभावी साबित करता है। इस किताब में दुनियाभर के ग्यारह ईसाई पादरियों और धर्मप्रचारकों की दास्तानें हैं जिन्होंने इस्लाम अपनाया। गौर करने वाली बात है कि ईसाईयत में गहरी पकड़ रखने वाले ये ईसाई धर्मगुरु आखिर इस्लाम अपनाकर मुसलमान क्यों बन गए? आज जहां इस्लाम को लेकर दुनियाभर में गलतफहमियां हैं और फैलाई जा रही हैं, ऐसे में यह किताब मैसेज देती है कि इस्लाम वैसा नहीं है जैसा उसका दुष्प्रचार किया जा रहा है। इस किताब के पीछे मेरा मकसद किसी भी धर्म विशेष का अपमान करना या उसे नीचा दिखाना नहीं बल्कि इन ईसाई पादरियों और धर्म प्रचारकों के जरिए यह बताना है कि इस्लाम पूरी इंसानियत के लिए अमनो-चैन का मजहब है, कामयाबी का रास्ता है।

- मुहम्मद चाँद
muhammadchand@gmail.com

# यूसुफ एस्टीज
## अमेरिका

***अमेरिका के तीन ईसाई पादरी इस्लाम की शरण में आ गए। उन्हीं तीन पादरियों में से एक यूसुफ एस्टीज की जुबानी कि कैसे वे जुटे थे एक मिस्त्री मुसलमान को ईसाई बनाने में, मगर जब सत्य सामने आया तो खुद ने अपना लिया इस्लाम।***




*बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं कि आखिर मैं एक ईसाई पादरी से मुसलमान कैसे बन गया? यह भी उस दौर में जब इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ हम नेगेटिव माहौल पाते हैं। मैं उन सभी का शुक्रिया अदा करता हूं जो मेरे इस्लाम अपनाने की दास्तां में दिलचस्पी ले रहे हैं। लीजिए आपके सामने पेश है मेरी इस्लाम अपनाने की दास्तां-*

# एक साथ तीन पादरी मुसलमान

मैं मध्यम पश्चिम के एक कट्टर ईसाई घराने में पैदा हुआ था। सच्चाई यह है कि मेरे परिवार वालों और पूर्वजों ने अमेरिका में कई चर्च और स्कूल कायम किए। 1949 में जब मैं प्राइमेरी स्कूल में था तभी हमारा परिवार टेक्सास के हाउस्टन शहर में बस गया। हम नियमित रूप से चर्च जाते थे। बारह साल की उम्र में मुझे ईसाई धार्मिक विधि बपतिस्मा दिया गया। किशोर अवस्था में मैं अन्य ईसाई समुदायों के चर्च, मान्यताओं, आस्था आदि के बारे में जानने को उत्सुक रहता था। मुझे गोस्पेल को जानने की तीव्र लालसा थी। धर्म के मामले में मेरी खोज और दिलचस्पी सिर्फ ईसाई धर्म तक ही सीमित नहीं थी हिंदू, यहूदी, बोद्ध धर्म ही नहीं बल्कि दर्शनशास्त्र और अमेरिकी मूल निवासियों की आस्था और विश्वास भी मेरे अध्ययन में शामिल रहे। सिर्फ इस्लाम ही ऐसा धर्म था जिसको मैंने गंभीरता से नहीं लिया था।

इस दौरान मेरी दिलचस्पी संगीत में बढ़ गई। खासतौर से गोस्पेल और क्लासिकल संगीत में। चूंकि मेरा पूरा परिवार धर्म और संगीत के क्षेत्र से जुड़ा हुआ था इसलिए मैं भी इन दोनों के अध्ययन में जुट गया। और इस तरह मैं कई गिरिजाघरों से संगीत पादरी के रूप में जुड़ गया। मैंने 1960 में लोगों को की बोर्ड के जरिए संगीत की शिक्षा दी और फिर 1963 में लॉरैल, मेरीलेण्ड में अपना 'एस्टीज म्यूजिक स्टूडियो' खोल लिया। इसके बाद मैंने करीब तीस साल तक अपने पिता के साथ मिलकर कई बिजनेस प्रोजेक्ट तैयार किए। हमने बहुत सारे मनोरंजन प्रोग्राम बनाए और कई शो किए। हमने टेक्सास और ऑकलाहोम से फ्लोरिडा के बीच कई पियानो और ऑरगन स्टोर खोले। इन सालों में मैंने करोड़ों डॉलर कमाए। करोड़ों

डॉलर कमाने के बावजूद दिल को सुकून नहीं था। सुकून तो सच्चाई की राह पाकर ही हासिल हो सकता था।

मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि आपके मन में भी यह सवाल उठते होंगे–आखिर ईश्वर ने मुझे किस मकसद के लिए पैदा किया है? ईश्वर को मुझसे किस तरह की अपेक्षा है? आखिर ईश्वर कौन है? हम मूल पाप में यकीन क्यों रखते हैं? इंसान को अपने पाप स्वीकारने के लिए क्यों मजबूर किया जाता है और इसके परिणामस्वरूप उसे सदा के लिए सजा क्यों दी जाती है?

अगर आप किसी से यह सवाल पूछते हैं तो आपसे कहा जाता है कि आपको ऐसे सवाल पूछे बिना अपने धर्म पर यकीन करना चाहिए या यह तो रहस्य है, ऐसे सवाल नहीं किए जाने चाहिए।

ठीक इसी तरह ट्रीनिटी(तसलीस) का सिद्धान्त भी है। अगर मैं किसी धर्मप्रचारक या किसी ईसाई पादरी से पूछता कि–'एक' अपने आप में तीन में कैसे बदल सकता है? ईश्वर तो कुछ भी करने की ताकत रखता है तो फिर लोगों के पाप कैसे माफ नहीं कर सकता? उसे जमीन पर एक इंसान के रूप में आकर सभी लोगों के पाप अपने ऊपर लेने की आखिर कहां जरूरत पड़ी? हमें याद रखना चाहिए की वह तो सारे ब्रह्माण्ड का पालक है, वह तो चाहे जैसा कर सकता है।

1991 में एक दिन मुझे यह जानकारी मिली कि मुसलमान बाइबिल पर यकीन रखते हैं। मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। आखिर ऐसे कैसे हो सकता है? इतना ही नहीं मुसलमान तो ईसा पर ईमान रखते हैं कि वे ईश्वर के सच्चे पैगम्बर थे और उनकी पैदाइश बिना पिता के अल्लाह के चमत्कार के रूप में हुई। ईसा अब ईश्वर के पास हैं, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अंतिम दिनों में फिर से इस जमीन पर आएंगे और एंटीक्राइस्ट(दज्जाल)के खिलाफ ईमान वालों का नेतृत्व करेंगे।

मुझे यह सब जानकर बड़ी हैरत हुई। दरअसल मैं जिन ईसाई पंथ वालों के साथ सफर किया करता था वे इस्लाम और मुसलमानों से सख्त नफरत किया करते थे। वे लोगों के बीच इस्लाम के बारे में झूठी बातें करके

लोगों को भ्रमित करते थे। ऐसे में मुझे लगता था कि मुझे इस धर्म के लोगों से आखिर क्या लेना-देना।

मेरे पिता चर्च से जुड़े कामों में जुटे हुए थे, खासतौर पर चर्च के स्कूल प्रोगाम्स में। 1970 में मेरे पिता अधिकृत रूप से पादरी बन गए। मेरे पिता और उनकी पत्नी (मेरी सौतेली मां) बहुत से ईसाई धर्म प्रचारकों को जानते थे। वे अमेरिका में इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन पेट रॉबर्टसन के नजदीकियों में से थे।

1991 में मेरे पिता ने मिस्र के एक मुसलमान शख्स के साथ बिजनेस शुरू किया। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उस शख्स से मिलूं। मैं बड़ा खुश हुआ कि चलो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कामकाज होगा। लेकिन जब मेरे पिता ने मुझे बताया कि वह शख्स मुसलमान है तो पहले तो मुझे अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। मैंने कहा-एक मुसलमान से मुलाकात करूं? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं नहीं मिलना चाहता किसी मुस्लिम से। हमने इनके बारे में बहुत सी बातें सुनी हैं। ये लोग आतंकवादी होते हैं, हवाई जहाज अगवा करते हैं, बम विस्फोट करते हैं, अपहरण करते हैं और ना जाने क्या-क्या करते हैं। वे ईश्वर में भरोसा नहीं करते। दिन में पांच बार जमीन को चूमते हैं और रेगिस्तान में किसी काले पत्थर की पूजा करते हैं।

मैंने इनसे कह दिया मैं किसी मुसलमान शख्स से नहीं मिल सकता। मेरे पिता ने मुझ से कहा कि वह बहुत अच्छा इंसान है और मुझ पर जोर डाला कि मैं उससे मिलूं। आखिर में मैं उस मुसलमान शख्स से मिलने को तैयार हो गया और शर्त रखी कि मैं सण्डे के दिन चर्च में प्रार्थना करने के बाद ही उससे मिलूंगा। मैंने हमेशा की तरह बाइबिल अपने साथ ली, चमकता क्रॉस गले में लटकाकर उससे मिलने पहुंचा। मेरी टोपी पर ठीक सामने लिखा था-जीसस ही रब है। मेरी पत्नी और दो छोटी बेटियां भी मेरे साथ थीं। अपने पिता के ऑफिस पहुंचकर मैंने उनसे पूछा-कहां है वह मुसलमान? पिता ने सामने बैठे शख्स की ओर इशारा किया। उसे देख मैं परेशानी में पड़ गया। मुसलमान तो ऐसा नहीं हो सकता। मैं तो सोचता था कि लंबे चौगे, दाढ़ी और सिर पर साफे के साथ लंबे कद और बड़ी आंखों वाले

शख्स से मुलाकात होगी। इस शख्स के तो दाढ़ी भी नहीं थी। सच बात तो यह है कि उसके सिर पर भी बाल नहीं थे। उसने बड़ी गर्मजोशी और खुशी के साथ मेरा स्वागत किया और मेरे से हाथ मिलाया। मैं तो कुछ समझ नहीं पाया। मैं तो सोचता था कि ये लोग तो आतंकवादी और बम विस्फोट करने वाले होते हैं। मैं तो चक्कर में फंस गया।

मैंने सोचा चलो कोई बात नहीं, मैं इस शख्स पर अभी से काम शुरू कर देता हूं। शायद ईश्वर मेरे जरिए ही इसे नरक की आग से बचाना चाह रहा है। एक दूसरे से परिचय के बाद मैंने उससे पूछा- क्या आप ईश्वर में यकीन रखते हैं? उसने कहा-'हां'। बहुत अच्छा, फिर मैंने पूछा-आप आदम और हव्वा में विश्वास रखते हैं? उसने कहा-'हां'। मैंने आगे पूछा- और इब्राहीम के बारे में आपका क्या मानना है? क्या आप उनको मानते हैं? और यह भी कि उन्होंने अपने बेटे को कुरबान करने की कोशिश की? उसने फिर हां में जवाब दिया। इसके बाद मैंने उससे जाना-मूसा को भी मानते हो? उसने फिर हामी भरी। मेरा अगला सवाल था-अन्य पैगम्बरों- दाऊद, सुलेमान, जॉहन आदि को भी मानते हो? उसका जवाब फिर हां में था। क्या तुम बाइबिल पर यकीन रखते हो? उसने हां कहा। अब मैं एक बड़े सवाल पर आया-क्या तुम ईसा को मानते हो? उसने कहा-हां।

यह सब जानकर मुझे उस शख्स को ईसाई बनाने का काम आसान लग रहा था। मुझे लग रहा था, उसे तो अब सिर्फ बपतिस्मा की विधि की ही जरूरत है और यह काम मेरे जरिए होने वाला है। मैं इसे बड़ी उपलब्धि मान रहा था। एक मुसलमान हाथ में आना और इसे ईसाई धर्म स्वीकार करवाना बड़ा काम था। उसने मेरे साथ चाय पीने की हां भरी तो हम एक चाय की दुकान पर चाय पीने गए। हम वहां बैठकर अपने पसंद के विषय आस्था, विश्वास आदि पर घंटों बातें करते रहे। ज्यादा बातें मैंने ही की। उससे बातचीत करने पर मुझे एहसास हुआ कि वह तो बहुत अच्छा आदमी है। वह कम ही बोलता था और शर्मीला भी था। उसने मेरी बात बड़ी तसल्ली से सुनी और बीच में एक बार भी नहीं बोला। मुझे उस शख्स का व्यवहार पसंद आया। मैंने मन ही मन सोचा-यह व्यक्ति तो बहुत अच्छा

ईसाई बनने की काबिलियत रखता है। लेकिन भविष्य में क्या होने वाला है, इसकी मुझे थोड़ी सी भनक भी नहीं थी।

मैंने अपने पिता से सहमति जताई और उसके साथ बिजनेस करने के लिए राजी हो गया। मेरे पिता ने मुझे प्रोत्साहित किया और मेरे से कहा कि मैं उस मुस्लिम शख्स को अपने साथ बिजनेस ट्यूर पर उत्तरी टेक्सास ले जाऊं। लगातार कई दिनों तक हमने कार में सफर के दौरान अलग-अलग धर्म और आस्थाओं पर चर्चा की। मैंने उसे रेडियो पर आने वाले इबादत से जुड़े अपने पसंदीदा प्रोग्राम्स के बारे में बताया। मैंने बताया कि इन धार्मिक प्रोग्राम्स में सृष्टि की रचना का उद्देश्य, पैगम्बर और उनके मिशन और ईश्वर अपने मैसेज इंसानों तक कैसे पहुंचाता है, इसकी जानकारी दी जाती है। इन रेडियो प्रोग्राम्स के जरिए कमजोर और आम लोगों तक यह धार्मिक संदेश पहुंच जाते हैं। इस दौरान हम दोनों ने अपने धार्मिक विचार और अनुभवों को एक दूसरे के साथ बांटा।

एक दिन मुझे पता चला कि मेरा यह मुस्लिम दोस्त मुहम्मद अपने मित्र के साथ जहां रह रहा था उस जगह को छोड़ चुका है और अब कुछ दिनों के लिए उसे मस्जिद में रहना पड़ेगा। मैं अपने पिता के पास गया और उनसे कहा कि क्यों न हम मुहम्मद को अपने बड़े घर में अपने साथ रख लें। वह अपने काम में भी हाथ बंटाएगा और अपने हिस्से का खर्चा भी अदा कर देगा। और जब कभी बिजनेस के सिलसिले में बाहर जाएंगे तो हमें हरदम तैयार मिलेगा। मेरे पिता को यह बात जम गई और फिर मुहम्मद हमारे साथ ही रहने लगा।

मैं टेक्सास में अपने साथी धर्मप्रचारकों से मिलने जाया करता था। उनमें से एक टेक्सास मैक्सिको सरहद तथा दूसरा ओकलहोमा सरहद पर रहता था। एक धर्मप्रचारक को तो बहुत बड़ा क्रॉस पसंद था जो उसकी कार से भी बड़ा था। वह उसे कंधे पर रखता और उसका सिरा जमीन पर घसीटते हुए चलता। जब वह उस क्रॉस को लेकर सड़क पर चलता तो कई लोग अपनी गाड़ी रोककर उससे पूछते-क्या चल रहा है? तो वह उन्हें ईसाई धर्म से जुड़ी किताबें और पम्फलेट देता। एक दिन मेरे इस क्रॉस वाले दोस्त को दिल का दौरा पड़ा और उसे हॉस्पिटल में लम्बे समय तक भर्ती

रहना पड़ा। मैं हफ्ते में कई बार उस दोस्त से मिलने जाता। साथ में मैं अपने दोस्त मुहम्मद को भी ले जाता और इस बहाने हम अपनी-अपनी धार्मिक मान्यताओं का आदान-प्रदान कर लेते। मेरे उस बीमार दोस्त पर इस्लाम का कोई असर नहीं पड़ा, इससे साफ जाहिर था कि इस्लाम के बारे में जानने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। एक दिन उसी अस्पताल में भर्ती एक मरीज व्हील चैयर पर मेरे दोस्त के कमरे में आया। मैं उसके नजदीक गया और मैंने उसका नाम पूछा। वह बोला-नाम कोई महत्वपूर्ण चीज नहीं है। मैंने उससे जाना कि वह कहां का रहने वाला है, तो वह चिड़कर बोला-मैं तो जूपीटर ग्रह से आया हूं। दरअसल वह अकेला था और अवसाद से पीड़ित था। इस वजह से मैं उसके सामने मालिक की गवाही देने की कोशिश करने लगा। मैंने उसे तौरात में से पैगम्बर यूनुस के बारे में पढ़कर सुनाया। मैंने बताया कि पैगम्बर यूनुस को ईश्वर ने लोगों को सीधी राह दिखाने के लिए भेजा था। यूनुस अपने लोगों को ईश्वर की सीधी राह दिखाने में विफल होकर उस बस्ती से निकल गए। इन लोगों से बचते हुए वे एक कश्ती में जाकर सवार हो गए। तूफान आया कश्ती भी टूटने लगी तो लोगों ने यूनुस को समंदर में फैंक दिया। एक व्हेल मछली पैगम्बर यूनुस को निगल गई। यूनुस मछली के पेट में समंदर में तीन दिन और तीन रात रहे। फिर जब यूनुस ने अपने गुनाह की माफी मांगी तो ईश्वर के आदेश से उस मछली ने उन्हें तट पर उगल दिया और वे अपने शहर निनेवा लौट आए। इस घटना में सबक यह था कि अपनी परेशानियों और बिगड़े हालात से भागना नहीं चाहिए। हम जानते हैं कि हमने क्या किया है और हमसे भी ज्यादा ईश्वर जानता है कि हमने क्या किया है।

इस वाकिए को सुनने के बाद व्हील चैयर पर बैठे उस शख्स ने ऊपर मेरी ओर देखा और मुझसे अपने किए व्यवहार की माफी मांगी। उसने कहा कि वह अपने रूखे व्यवहार से दुखी है और इन्हीं दिनों वह गम्भीर परेशानियों से गुजरा है। उसने कहा वह मेरे सामने अपने पाप कबूल करना चाहता है। मैंने उससे कहा मैं कैथोलिक पादरी नहीं हूं और मैं लोगों के पाप कबूल नहीं करवाता। वह बोला- 'मैं यह बात जानता हूं। मैं खुद एक

रोमन कैथोलिक पादरी हूं।' यह सुनकर मैं भौंचक्का रह गया। क्या मैं एक पादरी को ही ईसाई धर्म के उपदेश दे रहा था? मैं सोच में पड़ गया आखिर इस दुनिया में यह क्या हो रहा है। उस पादरी ने अपनी कहानी सुनाई। उसने बताया कि मैक्सिको और न्यूयॉर्क में वह बारह साल तक ईसाई प्रचारक के रूप में काम कर चुका है और यहां उसका अनुभव पीड़ादायक रहा। अस्पताल से छुट्टी के बाद उस ईसाई पादरी को ऐसी जगह की जरूरत थी जहां वह तंदुरुस्ती हासिल कर सके। मैंने अपने पिता से कहा कि उसे अपने यहां रहने के लिए कहना चाहिए कि वह भी हमारे साथ रहे। हम इस पर सहमत हो गए और वह भी हमारे साथ रहने लगा। मेरी उस ईसाई पादरी से भी इस्लाम की धारणाओं और मान्यताओं पर बातचीत हुई तो उसने इस पर अपनी सहमति जताई। उसकी सहमति पर मुझे ताज्जुब हुआ। उस पादरी से मुझे यह जानकर भी हैरत हुई कि कैथोलिक पादरी इस्लाम का अध्ययन करते हैं और कुछ ने तो इस्लाम में डॉक्टरेट की उपाधि भी ले रखी है।

हम हर शाम खाने के बाद टेबल पर बैठकर धर्म की चर्चा करते। चर्चा के दौरान मेरे पिता के पास किंग जेम्स की अधिकृत बाइबिल होती, मेरे पास बाइबिल का संशोधित स्टैंडर्ड वर्जन होता, मेरी पत्नी के पास बाइबिल का तीसरा रूप और कैथोलिक पादरी के पास कैथोलिक बाइबिल, जिसमें प्रोटेस्टेंट बाइबिल से सात पुस्तकें ज्यादा हैं। हमारा वक्त इसमें गुजरता कि किसकी बाइबिल ज्यादा सत्य और सही है और फिर हम मुहम्मद को बाइबिल का संदेश देकर उसे ईसाई बनाने की कोशिश करते। एक बार मैंने मुहम्मद से कुरआन के बारे में जाना कि पिछले चौदह सौ सालों में कुरआन के कितने रूप बन चुके हैं? उसने मुझे बताया कि कुरआन सिर्फ एक ही रूप में है और उसमें कभी कोई फेरबदल नहीं हुआ। उसने मुझे यह भी बताया कि कुरआन को दुनियाभर में लाखों लोग कंठस्थ याद करते हैं और कुरआन को जबानी याद रखने वाले लाखों लोग दुनियाभर में फैले हुए हैं। मुझे यह असंभव बात लगी। ऐसे कैसे हो सकता है? बाइबिल को देखो सैकड़ों सालों से इसकी मौलिक भाषा ही मर गई।

सैकड़ों साल के काल में इसकी मूल प्रति ही खो गई। फिर भला ऐसे कैसे हो सकता है कि कुरआन असली रूप में अभी भी मौजूद हो।

एक बार हमारे घर रह रहे कैथोलिक पादरी ने मुहम्मद से कहा कि वह उसके साथ मस्जिद जाना चाहता है और देखना चाहता है कि मस्जिद कैसी होती है। एक दिन वे दोनों मस्जिद गए। वापस आए तो वे मस्जिद के अपने अनुभव बांट रहे थे। हम भी पादरी से पूछे बगैर नहीं रह सके कि मस्जिद कैसी थी और वहां क्या-क्या विधियां कराई गईं? पादरी ने जवाब दिया-ऐसा कुछ नहीं किया गया जैसा तुम समझ रहे हो। मुस्लिम आए, नमाज पढ़ी और चले गए। 'चले गए, ऐसे ही चले गए? बिना कोई भाषण और गाने के ही चले गए?' उसने कहा-हां, ऐसा ही था उनकी इबादत का तरीका।

कुछ दिन और गुजरने के बाद एक दिन कैथोलिक पादरी ने मुहम्मद से कहा कि वह एक बार और उसके साथ मस्जिद जाना चाहता है। लेकिन इस बार तो कुछ अलग ही हुआ। वे काफी देर तक घर नहीं लौटे। अंधेरा हो गया तो हमें उनकी चिंता होने लगी। कहीं उनके साथ कुछ अनहोनी तो नहीं हो गई है? वे दोनों आए, दरवाजे में मैंने मुहम्मद को तो पहचान लिया लेकिन साथ आने वाले को एकदम से नहीं पहचान पाया। वह सफेद लंबा चौगा और सिर पर सफेद टोपी लगाए था। अरे, यह तो पादरी है? मैंने उससे पूछा-'पेटे, क्या तुम मुसलमान बन गए हो?' उसने कहा-हां, आज मैंने इस्लाम अपना लिया है।

क्या एक पादरी मुसलमान बन गया?

इसके बाद मैं ऊपर के कमरे में गया और इस मुद्दे पर अपनी पत्नी से बात की। मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि वह भी जल्दी ही इस्लाम अपनाने जा रही है, क्योंकि वह इस नतीजे पर पहुंची है कि इस्लाम सच्चा धर्म है। यह जानकर मुझे तगड़ा झटका लगा। मैंने नीचे आकर मुहम्मद को जगाया और उसे बाहर आकर मेरे साथ चर्चा करने को कहा। हम दोनों रात भर टहलते रहे और इस्लाम पर चर्चा करते रहे। फज्र की नमाज का वक्त हो गया था। अब तक मैं जान चुका था कि इस्लाम सत्य है और अब मुझे इस मामले

में अपनी भूमिका निभानी है। मैं पीछे की तरफ अपने पिता के घर गया। वहां एक पलाई का टुकड़ा पड़ा था। मैंने उसी पलाई के टुकड़े पर अपना माथा रख दिया। मेरा मुंह उस दिशा में था जिस तरफ मुंह करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मेरा बदन पलाई पर फैला था और मेरा ललाट जमीन पर टिका था। मैंने उसी स्थिति में सच्चे ईश्वर से प्रार्थना की– 'है ईश्वर अगर तुम यहां है तो मेरा मार्गदर्शन कर, मुझे सच्ची राह पर ले चल।' थोड़ी देर बाद मैंने अपना सिर उठाया तो मैंने कुछ खास महसूस किया। नहीं, नहीं मैंने चिड़िया या फरिश्तों को आसमान से आते हुए नहीं देखा। ना मैंने किसी तरह की आवाज सुनी और ना कोई संगीत। ना ही मैंने कोई तेज रोशनी देखी या रोशनी की कोई झलक। जो कुछ मैंने महसूस किया वह था मेरे अंदर हुआ बदलाव। मैंने खुद के अंदर बदलाव महसूस किया। अब मैं ज्यादा जागरूक हो गया था कि अब समय आ गया है कि मैं झूठ बोलना, धोखा देना और झूठ पर आधारित बिजनेस बंद कर दूं। अब समय आ गया है कि मैं अपने आपको सीधा, नेक और ईमानदार इंसान बनाने के काम में लग जाऊं। अब मेरी समझ में आ गया था कि मुझे अब क्या करना है। मैं ऊपर गया और फंव्वारे के नीचे बैठ नहाने लगा, इस सोच के साथ कि अब मैं अपने पुराने सभी गुनाह धो रहा हूं। और अब एक नई जिंदगी में दाखिल हो रहा हूं। एक ऐसी जिंदगी जिसका आधार सच्चाई है और जिसे किसी प्रमाण की जरूरत नहीं है। सुबह ग्यारह बजे दो गवाहों एक पूर्व पादरी फादर पीटर जेकब (जो अब मुसलमान हो चुका था) और मुहम्मद अब्दुल रहमान की उपस्थिति में मैंने इस्लाम का कलमा ए शहादत पढ़ लिया। खुली गवाही दी कि अल्लाह एक ही है और मुहम्मद(स.अ.व.)अल्लाह के पैगम्बर हैं। कुछ देर बाद ही मेरी पत्नी ने भी इस्लाम का कलमा पढ़ लिया। उसने तीन गवाहों के सामने कलमा पढ़ा। तीसरा मैं था।

मेरे पिता थोड़े संकोची स्वभाव के थे, इस वजह से उन्होंने कुछ महीने बाद इस्लाम कबूल किया लेकिन उसके बाद उन्होंने अपनी सारी ताकत और सामर्थ्य इस्लाम के लिए लगा दी। फिर तो हम अन्य मुसलमानों के साथ स्थानीय मस्जिद में नमाज अदा करने लगे।

मैंने बच्चों को भी ईसाई स्कूलों से हटाकर मुस्लिम स्कूलों में दाखिल करा दिया। इन दस सालों में बच्चे कुरआन और इस्लामी शिक्षा को याद करने में जुटे हैं।

सबसे बाद में मेरे पिता की पत्नी (मेरी सौतेली मां) ने इस बात को स्वीकार किया कि ईसा ईश्वर का बेटा नहीं हो सकता। ईसा तो ईश्वर का पैगम्बर था, ईश्वर नहीं था।

अब आप थोड़ा गौर करें और सोचें कि कैसे अलग-अलग पृष्ठभूमियों और पंथ वालों ने सत्य को अपनाया और यह जानने की कोशिश की कि किस तरह सृष्टि के रचयिता और अपने पालनहार को जाना जाए। आप जरा सोचिए तो सही। एक कैथोलिक पादरी। एक चर्च संगीतकार और पादरी। एक अधिकृत पादरी और ईसाई स्कूलों का संस्थापक। सब एक साथ मुसलमान हो गए। यह तो ईश्वर की मेहरबानी ही है कि हमारी आंखों से परदा हटा और इस्लाम रूपी सत्य को देखने के लिए ईश्वर ने हमारा मार्गदर्शन किया।

अगर मैं अपने जीवन की कहानी को यहीं पूरी कर दूं तो आपको लगेगा कि यह कहानी तो चकित करने वाली है। आश्चर्य वाली बात ही है कि तीन अलग-अलग पंथों के पादरियों ने अपने धर्म के एकदम खिलाफ माने जाने वाली मान्यताओं और विचारों को अपनाया। और उन्होंने ही नहीं बाद में उनके परिवार वालों ने भी इस्लाम अपनाया।

लेकिन बात अभी पूरी नहीं हुई। और भी है। उसी साल मैं टेक्सास के ग्रांड प्रेयरी स्थान पर था। वहां पर मेरी मुलाकात जोय नाम के बेपटिस्ट सेमीनारी के एक विद्यार्थी से हुई जिसने पादरियों को शिक्षा देने वाली संस्था सेमीनारी कॉलेज में पढ़ाई के दौरान कुरआन का अध्ययन किया और इस्लाम अपना लिया। और भी कई ऐसे लोग हैं। मुझे एक और कैथोलिक पादरी याद आ रहा है जो इस्लाम की अच्छाइयां इतनी ज्यादा बयान करता था कि एक दिन मैं उससे पूछ बैठा-आप इस्लाम में दाखिल क्यों नहीं हो जाते? उसका जवाब था-क्या? मैं अपनी नौकरी खो दूं? उसका नाम है-फादर जॉन और मुझे अब भी उससे उम्मीद है। इसी साल मेरी एक और पूर्व कैथोलिक

पादरी से मुलाकात हुई जो पिछले आठ सालों से अफ्रीका में ईसाई धर्म प्रचारक था। उसने इस्लाम के बारे में वहीं सीखा और फिर इस्लाम कबूल कर लिया। उसने अपना नाम उमर रखा और अभी वह डलास टैक्सास में रहता है।

इस्लाम अपनाने के बाद जब मैं एक प्रचारक के रूप में दुनियाभर में घूमा तो मेरी कई राजनीतिज्ञ, प्रोफेसर, दूसरे धर्मों के विद्वान और वैज्ञानिकों से मुलाकात हुई जिन्होंने इस्लाम धर्म का अध्ययन किया और फिर मुसलमान हो गए। इन लोगों में यहूदी, हिंदू, कैथोलक, प्रोटेस्टेंट, जहोवाज, विटनेसेस, ग्रीक और रसियन रूढ़िवादी चर्च, मिश्र के कॉप्टिक ईसाई और नास्तिक लोग शामिल हैं।

***जो शख्स सच की तलाश में है उसे इन नौ बातों पर गौर करना चाहिए-***

1 अपने दिल, दिमाग और आत्मा को वास्तविक भलाई के लिए पवित्र करो। साफ रखो।

2 हर तरह के पूर्वाग्रह और भेदभाव को अपने दिल और दिमाग से निकाल दो।

3 जो भाषा आप अच्छी तरह से जानते हैं उस भाषा में अनुवाद किया गया कुरआन पढ़ो।

4 थोड़ा रुको, ठहरो।

5 गौर फिक्र-चिंतन करो।

6 सोचो और ईश्वर से प्रार्थना करो।

7 जिस सर्वशक्तिमान ने आपको बनाया है, उससे दिल से प्रार्थना करो कि वह आपको सत्य तक पहुंचाने में आपका मार्गदर्शन करे। आपको सच्ची राह दिखाए।

8 कुछ महीनों तक इस अभ्यास को जारी रखें और नियमानुसार इसे रोजाना करें।

9 जब आपको लगे कि आपकी आत्मा एक नए रूप में करवट ले रही है। आपको लगे मानो आप एक नए रूप में जन्म ले रहे हैं तो ऐसे में ऐसे

लोगों से बचें जिनकी सोच में जहर भरा हो जो आपको गुमराह कर सकते हैं।

अब आपका मामला आपके और इस ब्रह्माण्ड के सर्वशक्तिमान मालिक के बीच है। अगर आप वाकई में सच्चे ईश्वर से सच्चा प्रेम करते हैं तो वह इस बात से अंजान नहीं है क्योंकि वह तो दिलों तक की बात जानने वाला है। और वह उसी हिसाब से आपका मामला तय करेगा जो आपके दिल में है।

ईश्वर से दुआ है कि वह आपको सच्ची राह दिखाने में आपका मार्गदर्शन करे। वह इस जगत की सच्चाई और जिंदगी का मकसद जानने के लिए आपके दिल और दिमाग को खोलें।

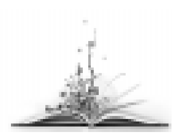
आमीन

आपका दोस्त

यूसुफ एस्टीज

यूसुफ एस्टीज की ऑफिसियल वेबसाइट–

http://www.islamtomorrow.com/



# डॉ. गैरी मिलर

## कनाडा

***एक अहम ईसाई धर्म प्रचारक कनाडा के डॉ. गैरी मिलर ने इस्लाम अपना लिया और वे इस्लाम के लिए एक महत्वपूर्ण संदेशवाहक साबित हुए। डॉ. गैरी मिलर सक्रिय ईसाई प्रचारक थे और बाइबिल की शिक्षाओं पर उनकी गहरी पकड़ थी।***



*एक दिन डॉ. गैरी मिलर ने कमियां निकालने के मकसद से कुरआन का अध्ययन करने का निश्चय किया ताकि वह इन कमियों को आधार बनाकर मुसलमानों को ईसाई बना सके। लेकिन उन्होंने कुरआन का अध्ययन किया तो वह दंग रह गए। उन्होंने कुरआन के अध्ययन में पाया कि दुनिया में कुरआन जैसी कोई दूसरी किताब नहीं है।*

# ईसाई धर्म प्रचारक बन गया कुरआन का मुरीद

एक अहम ईसाई धर्म प्रचारक कनाडा के गैरी मिलर ने इस्लाम अपना लिया और वे इस्लाम के लिए एक महत्वपूर्ण संदेशवाहक साबित हुए। मिलर सक्रिय ईसाई प्रचारक थे और बाइबिल की शिक्षाओं पर उनकी गहरी पकड़ थी। वे गणित को काफी पसंद करते थे और यही वजह है कि तर्क में मिलर का गहरा विश्वास था। एक दिन गैरी मिलर ने कमियां निकालने के मकसद से कुरआन का अध्ययन करने का निश्चय किया ताकि वह इन कमियों को आधार बनाकर मुसलमानों को ईसाईयत की तरफ बुला सके और उन्हें ईसाई बना सके। वे सोचते थे कि कुरआन चौदह सौ साल पहले लिखी गई एक ऐसी किताब होगी जिसमें रेगिस्तान और उससे जुड़े कहानी-किस्से होंगे। लेकिन उन्होंने कुरआन का अध्ययन किया तो वह दंग रह गए। कुरआन को पढ़कर वह आश्चर्यचकित थे। उन्होंने कुरआन के अध्ययन में पाया कि दुनिया में कुरआन जैसी कोई दूसरी किताब नहीं है। पहले डॉ. मिलर ने सोचा था कि कुरआन में पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. के मुश्किलभरे दौर के किस्से होंगे जैसे उनकी बीवी खदीजा रजि. और उनके बेटे-बेटियों की मौत से जुड़े किस्से। लेकिन उन्होंने कुरआन में ऐसे कोई किस्से नहीं पाए बल्कि वे कुरआन में मदर मैरी के नाम से पूरा एक अध्याय देखकर दंग रह गए। डॉ. मिलर ने पाया कि मैरी के अध्याय सूरा मरियम में जो इज्जत और ओहदा पैगम्बर ईसा की मां मरियम को दिया गया है वैसा सम्मान उन्हें ना तो बाइबिल में दिया गया और ना ही ईसाई लेखकों द्वारा लिखी गई किताबों में वह मान-सम्मान दिया गया। यही नहीं डॉ. मिलर ने पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. की बेटी फातिमा रजि. और उनकी बीवी आईशा रजि. के नाम से कुरआन में कोई

अध्याय नहीं पाया। उन्होंने जाना कि कुरआन में ईसा मसीह का नाम 25 बार आया है जबकि खुद मुहम्मद सल्ल. का नाम केवल चार बार ही आया है। यह सब जानने के बाद वे ज्यादा कन्फ्यूज हो गए। वे लगातार कुरआन का अध्ययन करते रहे इस सोच के साथ कि इसमें उन्हें जरूर कमियां और दोष पकड़ में आएंगे लेकिन कुरआन का अध्याय अल निशा की 82 आयत पढ़कर वे आश्चर्यचकित रह गए, इस अध्याय में हैं–

***क्या वे कुरआन में गौर और फिक्र नहीं करते। अगर यह अल्लाह के अलावा किसी और की तरफ से होता तो वे इसमें निश्चय ही बेमेल बातें और विरोधाभास पाते।***

कुरआन की इस आयत के बारे में डॉ. गैरी मिलर कहते हैं, साइंस का एक जाना पहचाना सिद्धांत है जो आपको गलतियां और कमियां निकालने का अधिकार देता है जब तक कि यह सही साबित ना हो जाए। इसे फालसिफिकेशन टेस्ट कहते हैं। डॉ. मिलर कहते हैं, ताज्जुब की बात है कि कुरआन खुद मुसलमानों और गैर मुसलमानों से इस किताब में कमियां निकालने की कोशिश करने को कहता है और दावा करता है कि वे इसमें कभी कोई कमी नहीं तलाश पाएंगे। वे इस आयत के बारे में कहते हैं, 'दुनिया में कोई ऐसा लेखक नहीं है जो कोई किताब लिखकर यह कहने की हिम्मत कर सके कि उसकी लिखी किताब में किसी भी तरह की कमी नहीं है। दूसरी तरफ कुरआन कहता है कि उसमें कोई कमी या दोष नहीं है और कहता है कि तुम एक भी गलती ढूंढ़कर बताओ और तुम ऐसा हर्गिज नहीं कर पाओगे।'

कुरआन की दूसरी आयत जिससे डॉ. गैरी मिलर प्रभावित हुए वह है सूरा अंबिया जिसमें है–

***क्या उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, देखा नहीं कि ये आकाश और धरती मिले हुए थे। फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जिंदा चीज बनाई, तो क्या वे मानते नहीं?***

***(21:30)***

डॉ. मिलर कहते हैं, यह आयत दरअसल वैज्ञानिक अनुसंधान का विषय

है, इस विषय पर 1973 में नोबेल पुरस्कार दिया गया और जो महान विस्फोट की थ्योरी से संबंधित है। इस थ्योरी के मुताबिक इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति इसी विस्फोट के परिणामस्वरूप थी।

डॉ.गैरी मिलर कहते हैं, हम बात करते हैं पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. को शैतान द्वारा मदद करने के दुष्प्रचार के बारे में। अल्लाह कुरआन में कहता है–

***इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। यह काम न तो उनको सजता है और न ये उनके बस का ही है। वे तो इसके सुनने से भी दूर रखे गए हैं।***
***(26: 210–212 )***

***अतः जब तुम कुरआन पढ़ने लगो तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए अल्लाह की पनाह मांग लिया करो। ( 16: 98 )***

डॉ. मिलर कहते हैं, आप खुद सोचिए और बताइए क्या यह शैतान द्वारा रचित किताब हो सकती है। शैतान खुद अपने लिए ही आखिर क्यों कहेगा कि कुरआन को पढ़ने से पहले तुम शैतान से बचने के लिए अल्लाह की पनाह मांगों। क्या यह चमत्कारिक कुरआन की चमत्कारिक आयत नहीं है? क्या यह आयत उन लोगों के मुंह पर करारा चांटा नहीं है जो यह कहते हैं कि कुरआन शैतान की तरफ से अवतरित ग्रंथ है।

डॉ. मिलर को प्रभावित करने वाली कुरआन के अध्यायों में से एक अबू लहब से जुड़ा अध्याय है। डॉ. मिलर कहते हैं, 'अबू लहब इस्लाम से इतनी नफरत करता था कि वह पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. का अपमान करने के लिए उनका अक्सर पीछा करता था। वह देखता कि मुहम्मद सल्ल. किसी अजनबी से बात कर रहे हैं तो वह इंतजार करता और उनके जाने के बाद उस शख्स से पूछता कि मुहम्मद सल्ल. तुमसे क्या कह रहे थे? फिर वह उनकी बात को नकारता, अगर वे कहते कि यह सफेद है तो अबू लहब उसे काला बताता और पैगम्बर की बताई हुई रात को वह दिन बताता यानी मुहम्मद सल्ल. की हर बात को झूठी करार देता। इस तरह अबू लहब पैगम्बर के मैसेज के मामले में लोगों को गुमराह करने का काम करता। अबू लहब की मौत से दस साल पहले मुहम्मद सल्ल.पर एक सूरा (अध्याय) अवतरित हुई जिसमें बताया गया कि अबू लहब दोजख में

जाएगा यानी अबू लहब कभी इस्लाम नहीं अपनाएगा। अपनी मौत से पहले उन दस सालों के दौरान अबू लहब ने कभी भी नहीं कहा कि 'देखो मुहम्मद कह रहा है कि मैं कभी मुस्लिम नहीं बनूंगा और दोजख की आग में जलूंगा जबकि मैं आप लोगों से कह रहा हूं कि मैं इस्लाम अपनाकर मुसलमान बनना चाहता हूं। अब तुम मुहम्मद के बारे में क्या सोचते हो? वह सच्चा है या झूठा? उस पर अवतरित होने वाली वाणी आखिर ईश्वर की तरफ से कैसे हुई?'

लेकिन अबू लहब ने ऐसा कुछ नहीं कहा। मुहम्मद सल्ल. को हर मामले और हर बात में झुठलाने वाले अबू लहब ने इस मामले में ऐसा कुछ नहीं कहा! दूसरे शब्दों में कहें कि अबू लहब के पास एक ऐसा मौका था जिसके जरिए वह पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. को झूठा साबित कर सकता था। लेकिन इन दस सालों के दौरान ना अबू लहब ने इस्लाम अपनाया और ना इस्लाम अपनाने का ढोंग किया। अबू लहब के पास इन दस सालों के दौरान एक मिनट में इस्लाम को झूठा साबित करने का मौका था।

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, सवाल उठता है आखिर क्यों ऐसा नहीं हुआ? क्योंकि यह मुहम्मद सल्ल. के शब्द नहीं थे बल्कि उस अल्लाह के शब्द थे जो जानता था कि अबू लहब कभी भी मुस्लिम नहीं बनेगा। अगर ये पैगाम अल्लाह की तरफ से ना होता तो आखिर मुहम्मद सल्ल. कैसे जान पाते कि अबू लहब इन दस सालों में ऐसा ही रहेगा जैसा कि इस सूरा में जिक्र किया गया है। क्या किसी शख्स के लिए ऐसा कहना या ऐसा कहने का जोखिम लेना संभव है? इस सबसे यही पता चलता है, यही निष्कर्ष निकलता है कि नीचे लिखी यह सूरा ईश्वर की ओर से अवतरित हुई जो हर तरह का ज्ञान रखता है।'

***टूट गए अबू लहब के दोनों हाथ और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया! न उसका माल उसके काम आया और न वह कुछ जो उसने कमाया। वह शीघ्र ही प्रज्वलित भड़कती आग में पड़ेगा, और उसकी स्त्री भी ईंधन लादनेवाली, उसकी गरदन में खजूर के रेशों की बटी हुई रस्सी पड़ी है।*** ***(111: 1-5)***

डॉ. गैरी मिलर कुरआन की एक और सूरा का जिक्र करते हैं जिससे वे काफी प्रभावित हुए। वे कहते हैं कुरआन के चमत्कारों में से एक चमत्कार यह है कि कुरआन भविष्य से जुड़ी बातों को एक चुनौती के रूप में पेश करता है। इस तरह की भविष्यवाणी करना किसी इंसान के बूते की बात नहीं है। उदाहरण के लिए यहूदियों और मुसलमानों के बीच के रिश्ते के मामले में कुरआन कहता है कि यहूदी मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन हैं और यह सच भी है। आज भी मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन यहूदी ही हैं।

डॉ. मिलर आगे कहते हैं, 'यह एक तगड़ी चुनौती है और यहूदियों को इस्लाम को गलत साबित करने का मौका भी देती है कि वे मुसलमानों से चंद साल दोस्ताना रिश्ते रखकर यह कह दें कि देखो भाई हम तो तुमसे दोस्ताना रिश्ता रखते हैं और तुम्हारा यह कुरआन हमें तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन बता रहा है, तो क्या तुम्हारा कुरआन गलत नहीं हुआ? लेकिन पिछले चौदह सौ सालों में ऐसा कुछ नहीं हुआ। यानी यहूदियों ने ऐसा कुछ नहीं किया जिससे कुरआन पर उंगली उठाई जा सके। और आगे भी ऐसा कुछ नहीं होगा क्योंकि यह ईश्वर के शब्द हैं जो सिर्फ भविष्य की ही नहीं हर काल की हर बात से वाकिफ है। कुरआन किसी इंसान का रचा हुआ नहीं है।'

डॉ. मिलर कहते हैं, आप गौर कर सकते हैं कि कि मुसलमानों और यहूदियों के बीच के संबंधों की बात करने वाली कुरआन की यह आयत इंसानी दिमाग के सामने एक चुनौती पेश करती है।

***'तुम ईमानवालों का शत्रु सब लोगों से बढ़कर यहूदियों और बहुदेववादियों को पाओगे। और ईमान लानेवालों के लिए मित्रता में सबसे निकट उन लोगों को पाओगे, जिन्होंने कहा कि 'हम नसारा (ईसाई) हैं।' यह इस कारण है कि उनमें बहुत-से धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी सन्त पाए जाते हैं। और इस कारण कि वे अहंकार नहीं करते।***

***जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ तो तुम देखते हो कि उनकी आंखें आंसुओं से छलकने लगती हैं। इसका कारण यह है कि***

***उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वे कहते हैं, 'हमारे रब! हम ईमान ले आए। अत तू हमारा नाम गवाही देनेवालों में लिख ले।'***

***'और हम अल्लाह पर और जो सत्य हमारे पास पहुंचा है उस पर ईमान क्यों न लाएं, जबकि हमें आशा है कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ ( जन्नत में ) प्रविष्ट करेगा।'     ( 5: 82-84 )***

यह आयतें डॉ. गैरी मिलर पर भी लागू होती हैं। मिलर पर भी यह आयतें सच साबित हुई हैं जैसा कि डॉ. गैरी मिलर पहले ईसाई थे लेकिन जब सच सामने आया तो इन्होंने इस्लाम अपना लिया और मुसलमान बनकर इस्लाम के एक मजबूत प्रचारक बन गए। उन्होंने अपना नाम अब्दुल अहद उमर रखा। डॉ. मिलर कुरआन की प्रस्तुति को अनूठी और चमत्कारिक मानते हैं और कहते हैं कि इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन एकदम अलग हटकर और चमत्कारिक है। दुनिया में कोई भी किताब इस जैसी नहीं है। कुरआन जब कोई खास जानकारी देता है तो बताता है कि तुम इससे पहले यह नहीं जानते थे। ऐसे ही चंद उदाहरण हैं-

***'ऐ नबी, ये गैब की खबरें हैं जो हम तुमको वह्य ( प्रकाशना ) के जरिए बता रहे हैं, वरना तुम उस वक्त वहां मौजूद न थे,जब हैकल के खादिम यह फैसला करने के लिए कि मरयम का सरपरस्त कौन हो, अपने-अपने कलम फेंक रहे थे ( यानी कुरआ-अंदाजी कर रहे थे ), और न तुम उस वक्त हाजिर थे जब वे आपस में झगड़ रहे थे। '***

***( 3-44 )***

***'ये परोक्ष की खबरें हैं जिनकी हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं। इससे पहले तो न तुम्हें इनकी खबर थी और न तुम्हारी कोम को। अतः धैर्य से काम लो। निस्संदेह अन्तिम परिणाम डर रखनेवालों के पक्ष में है ।'     ( 11-49 )***

***'ऐ नबी यह किस्सा गैब की खबरों में से है जो हम तुम्हारी ओर प्रकाशना कर रहे हैं, वरना तुम उस वक्त मौजूद न थे जब यूसुफ के भाइयों ने आपस में सहमति कर साजिश की थी।'***

***( 12:102 )***

डॉ. मिलर आगे कहते हैं, दूसरी किसी भी किताब में आपको कुरआन जैसा अंदाज देखने को नहीं मिलेगा। बाकी दूसरी सभी किताबों में जो जानकारी दी जाती है उसमें उल्लेख होता है कि यह जानकारी कहां से ली गई है। उदाहरण के लिए बाइबिल जब पुराने राष्ट्रों का जिक्र करती है तो उसमें पढ़ने को मिलता है कि वह राजा फलां देश में रहता था और फलां लीडर ने यह जंग लड़ी और फलां शख्स के काफी बच्चे थे जिनके नाम ये हैं। लेकिन बाइबिल में हमेशा यह पढ़ने को मिलता है कि अगर आप इनके बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करना चाहते हैं तो फलां किताब पढें जहां से यह जानकारी ली गई है।'

डॉ. मिलर आगे कहते हैं, बाइबिल के विपरीत कुरआन कई नई जानकारी देता है और बताता है कि यह नई जानकारी है जो तुम्हें बताई जा रही है। कितने आश्चर्य की बात है कि कुरआन के अवतरण के दौरान मक्का के लोगों को यह नई बातें जानने को मिलती थीं। यह चुनौती भी थी कि यह जानकारी नई है, इन नई बातों के बारे में ना तो पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. जानते थे और न ही मक्का के लोग। यही नहीं उस वक्त के लोगों ने यह कभी नहीं कहा कि कुरआन की बताई यह नई बात हम पहले से जानते हैं और  यह हमारे लिए नई जानकारी नहीं है। किसी शख्स में यह कहने का साहस नहीं था कि हमसे झूठ कहा जा रहा है क्योंकि यह जानकारी वास्तव में नई थी जो किसी इंसान की तरफ से नहीं बल्कि उस सर्वज्ञानी अल्लाह की तरफ से थी जो भूत, भविष्य और वर्तमान के हर एक पहलू से पूरी तरह वाकिफ है।

# इदरीस तौफीक
## ब्रिटेन

***ब्रिटेन का एक पूर्व कैथोलिक ईसाई पादरी इदरीस तौफीक कुरआन से इतना प्रभावित हुआ कि उसने इस्लाम कुबूल कर लिया।***



***ब्रिटेन के अन्य लोगों की तरह पहले मुसलमानों को लेकर मेरा भी यही नजरिया था कि मुसलमान आत्मघाती हमलावर, आतंकवादी और लड़ाकू होते हैं। दरअसल ब्रिटिश मीडिया मुसलमानों की ऐसी ही तस्वीर पेश करता है। इस वजह से मेरी सोच बनी हुई थी कि इस्लाम तो उपद्रवी मजहब है। काहिरा में मुझे एहसास हुआ कि इस्लाम तो बहुत ही खूबसूरत धर्म है-इदरीस तौफीक***

# कुरआन ने इन पर जादुई असर डाला

***ईमानवालों के साथ दुश्मनी करने में यहूदियों और बहुदेववादियों को तुम सब लोगों से बढ़कर सख्त पाओगे। और ईमानवालों के साथ दोस्ती के मामले में सब लोगों में उनको नजदीक पाओगे जो कहते हैं कि हम नसारा ( ईसाई ) हैं। यह इस वजह से है कि उनमें बहुत से धर्मज्ञाता और संसार त्यागी संत पाए जाते हैं और इस वजह से कि वे घमण्ड नहीं करते।***

***जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि उनकी आंखें आंसुओं से छलकने लगती हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने सच्चाई को पहचान लिया है। वे कहते हैं-हमारे रब हम ईमान ले आए। अत तू हमारा नाम गवाही देने वालों में लिख ले।***

***( सूराःअल माइदा 82-83 )***

कुरआन की ये वे आयतें हैं जिन्हें इंग्लैण्ड में अपने स्टूडेण्ट्स को पढ़ाते वक्त इदरीस तौफीक बहुत प्रभावित हुए और उन्हें इस्लाम की तरफ लाने में ये आयतें अहम साबित हुईं।

काहिरा के ब्रिटिश परिषद में दिए अपने एक लेक्चर में तौफीक ने कहा कि उसे अपनी पिछली जिंदगी और वेटिकन में पादरी के रूप में गुजारे पांच साल को लेकर किसी तरह का अफसोस नहीं है। मैं एक पादरी के रूप में लोगों की मदद कर खुशी महसूस करता था लेकिन फिर भी दिल में सुकून नहीं था। मुझे एहसास होता था कि मेरे साथ सब कुछ ठीकठाक नहीं है। अल्लाह की मर्जी से मेरे साथ कुछ ऐसे संयोग हुए जिन्होंने मुझे इस्लाम की तरफ बढ़ाया। ब्रिटिश परिषद के खचाखच भरे हॉल में तौफीक ने यह बात कही।

तौफीक के लिए दूसरा अच्छा संयोग यह हुआ कि उन्होंने वेटिकन को छोड़कर इजिप्ट का सफर करने का मन बनाया। मैं इजिप्ट को लेकर अकसर सोचता था-एक ऐसा देश जिसकी पहचान पिरामिड, ऊंट, रेगिस्तान और खजूर के पेड़ों के रूप में है। मैं चार्टर उड़ान से हरगाडा पहुंचा। मैं यह देखकर हैरान रह गया कि यह तो यूरोपियन देशों के दिलचस्प समुद्री तटों की तरह ही खूबसूरत था। मैं पहली बस से ही काहिरा पहुंचा जहां मैंने एक सप्ताह गुजारा। यह सप्ताहभर का समय मेरी जिंदगी का अहम और दिलचस्प समय रहा। यहीं पर पहली बार मेरा इस्लाम और मुसलमानों से परिचय हुआ। मैंने देखा कि इजिप्ट के बाशिंदे कितने अच्छे और व्यवहारकुशल होते हैं, साथ ही साहसी भी।

ब्रिटेन के अन्य लोगों की तरह पहले मुसलमानों को लेकर मेरा भी यही नजरिया था कि मुसलमान आत्मघाती हमलावर, आतंकवादी और लड़ाकू होते हैं। दरअसल ब्रिटिश मीडिया मुसलमानों की ऐसी ही तस्वीर पेश करता है। इस वजह से मेरी सोच बनी हुई थी कि इस्लाम तो उपद्रवी मजहब है। काहिरा में मुझे एहसास हुआ कि इस्लाम तो बहुत ही खूबसूरत धर्म है। इसको जिंदगी में अपनाने वाले मुस्लिम बहुत ही सीधे और सरल होते हैं। मस्जिद से नमाज की अजान सुनते ही वे अपना काम-धंधा छोड़कर अल्लाह की इबादत के लिए दौड़ पड़ते हैं। वे अल्लाह की इच्छा और इसकी रहमत पर जबरदस्त भरोसा रखते हैं। वे पांच वक्त नमाज अदा करते हैं, रोजे रखते हैं, जरूरतमंद लोगों की मदद करते हैं और हज के लिए मक्का जाने की ख्वाहिश रखते हैं। वे यह सब इस उम्मीद में करते हैं कि अल्लाह उन्हें मौत के बाद दूसरी जिंदगी में जन्नत में दाखिल करेगा।

'काहिरा से लौटने के बाद मैं धार्मिक शिक्षा देने के अपने पुराने काम में फिर से जुट गया। ब्रिटेन में धार्मिक विषयों का अध्ययन अनिवार्य विषय के रूप में है। मैं ईसाईयत, इस्लाम, यहूदी, बोद्ध और अन्य धर्मों के बारे में स्टूडेण्ट्स को पढ़ाता था। इस वजह से मुझे इन धर्मों के बारे में अध्ययन करना पड़ता था ताकि मैं छात्रों को इन धर्मों के बारे में बता सकूं। मेरी क्लास में कुछ अरब के मुस्लिम छात्र भी थे। यूं समझिए की इस्लाम के

बारे में पढ़ाने के लिए खुद अध्ययन करते वक्त मैंने इस्लाम के बारे में काफी कुछ जाना।'

'अरब के वे मुस्लिम छात्र बहुत ही नम्र, शालीन और व्यवहारकुशल थे। मेरी उनसे दोस्ती हो गई। उन्होंने मुझसे मेरे क्लासरूम में रमजान के महीने के दौरान नमाज पढ़ने की इजाजत मांगी। दरअसल मेरे क्लासरूम में कारपेट बिछा होता था। वे नमाज अदा करते और मैं उनको पीछे बैठकर देखता रहता। उनसे प्रेरित होकर मैंने भी रोजे रखे हालांकि अभी मैं मुसलमान नहीं हुआ था।

एक बार कुरआन का अध्ययन करते वक्त मेरे सामने यह आयतें आई–

'जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि उनकी आंखें आंसुओं से छलकने लगती हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने सच्चाई को पहचान लिया है। वे कहते हैं–हमारे रब हम ईमान ले आए। अत तू हमारा नाम गवाही देने वालों में लिख ले।'

यह आयतें पढ़ने के बाद मैं यह देखकर हैरान हो गया कि मेरी आंखों से आंसू निकल रहे हैं। मैंने मुश्किल से स्टूडेण्ट्स के सामने अपने आंसू छिपाए।'

### *और जिंदगी बदल गई*

अमेरिका पर 11 सितम्बर 2001 को आतंकी हमला होने के बाद तौफीक की जिंदगी में एक बहुत बड़ा बदलाव आया।

'उन दिनों मैं भी बाहर नहीं निकला और मैंने देखा कि लोग काफी भयभीत थे। मैं भी काफी डरा हुआ था और आशंका थी कि इस तरह के आतंकी हमले ब्रिटेन में भी हो सकते हैं। उस वक्त पश्चिम के लोग इस्लाम से घबराने लगे और उन्होंने आतंकवाद के लिए इस्लाम को जिम्मेदार ठहराना शुरू कर दिया।'

'हालांकि मेरा तो मुसलमानों के साथ अलग तरह का अनुभव था और मैं इसके लिए इस्लाम को कतई जिम्मेदार नहीं मानता था। मुझे हैरत हुई–इस्लाम इसके लिए जिम्मेदार कैसे हुआ? कुछ सिरफिरे लोगों द्वारा किए गए इस कुकृत्य के लिए आखिर इस्लाम को दोषी कैसे माना जा सकता

है? जब ऐसी ही कोई घटना ईसाई अंजाम देते हैं तब तो इसके लिए ईसाईयत को जिम्मेदार नहीं माना जाता?

एक दिन मैं इस्लाम के बारे में और भी जानने के लिए लंदन की सबसे बड़ी मस्जिद लन्दन सैन्ट्रल मस्जिद पहुंचा। वहां इस्लाम कुबूल कर चुके पूर्व पॉप स्टार यूसुफ इस्लाम एक सर्किल में बैठकर लोगों से इस्लाम के बारे में चर्चा कर रहे थे। वहां पहुंचने के थोड़ी देर बाद मैंने उनसे पूछा–आखिर आपने इस्लाम क्यों कबूल किया?

उन्होंने जवाब दिया–एक मुस्लिम एक ईश्वर में भरोसा करता है। पांच वक्त नमाज अदा करता है। रमजान के रोजे रखता है। मैंने बीच में ही उनको रोकते हुए कहा–मैं भी इन सब में भरोसा रखता हूं और रमजान के दौरान रोजे रखता हूं। उन्होंने कहा–फिर तुम किस बात का इन्तजार कर रहे हो? कौनसी बात तुम्हें मुसलमान होने से रोके हुए है? मैंने कहा–नहीं, मेरा धर्म–परिवर्तन का कोई इरादा नहीं है।

इसी पल नमाज के लिए अजान हुई और सभी वुजू बनाकर नमाज अदा करने के लिए लाइन में जाकर खड़े हो गए। मैं पीछे की तरफ बैठ गया। मैं मन ही मन चिल्लाया। मन ही मन सोचा आखिर मैं ऐसी बेवकूफी क्यों कर रहा हूं? जब वे नमाज पढ़ चुके तो मैं यूसुफ इस्लाम के पास गया और इस्लाम कबूल करने के लिए कलमा पढ़ाने के लिए उनसे कहा। यूसुफ इस्लाम ने पहले मुझे अंग्रेजी में अरबी कलमे के मायने बताए और फिर मैंने भी कलमा पढ़ लिया–

***'अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं और मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के पैगम्बर हैं।'***

यह कहते हुए तौफीक की आंखों में आंसू निकल पड़े।

इस तरह तौफीक की जिंदगी ने एक नई दिशा ली। इजिप्ट में रहते हुए तौफीक ने इस्लाम के उसूलों पर एक किताब गार्डन ऑफ डिलाइट लिखी। अपनी इस किताब के बारे में तौफीक ने कहा–हर कोई यह कहता है कि इस्लाम का आतंकवाद से कोई ताल्लुक नहीं है और इस्लाम नफरत पैदा करने वाला मजहब नहीं है लेकिन वे लोगों को नहीं बताते कि

इस्लाम कितना खूबसूरत मजहब है और इसमें इंसानियत से जुड़े कितने अच्छे उसूल हैं। इस वजह से मैंने इस्लाम के आधारभूत उसूलों पर किताब लिखना तय किया। मैं लोगों को बताता हूं कि इस्लाम तो इंसानियत को बढ़ावा देने वाला मजहब है जिसमें सबके साथ बेहतर सुलूक करने पर जोर दिया गया है। पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. फरमाते हैं–अपने भाई को देखकर मुस्कुराना भी नेकी है।

तौफीक ने बताया कि वे पैगम्बर मुहम्मद सल्ल. पर एक किताब लिख रहे हैं जो उन पर पहले से लिखी गई किताबों से अलग हटकर होगी। तौफीक का मानना है कि अपनी जिंदगी में इस्लाम के उसूलों को अपनाकर ही दुनिया के सामने इस्लाम को अच्छे अंदाज में रखा जा सकता है। यही अच्छा तरीका है दुनिया के सामने इस्लाम को सही तरीके से पेश करने का।

***यह आर्टिकल  इजिप्टियन गजट में 2 जुलाई 2007 को अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ था।***

# खदीजा स्यू वाट्सन
## अमेरिका

*वे कट्टर ईसाई थीं। लेकिन जब इस्लाम का अध्ययन किया और इस्लाम के रूप में सच्चाई सामने आई तो इसे अपना लिया।*

*पूर्व पादरी, मिशनरी, प्रोफेसर और धर्मशास्त्र में मास्टर डिग्री धारक खदीजा स्यू वाट्सन की जुबानी कि वे किस तरह इस्लाम की आगोश में आईं।*



मैंने जाना कि इस्लाम में
महिलाओं को किस
तरह की हैसियत और अधिकार
दिए गए हैं? मुझे बेहद हैरत हुई।
दरअसल पहले मैं नहीं जानती थी
कि इस्लाम में महिलाओं को इतना
ऊंचा मुकाम दिया गया है।

# इस्लाम सच्चा धर्म है।

यह तुम्हें क्या हो गया है? यह पहली प्रतिक्रिया होती थी जब इस्लाम अपनाने के बाद पहली बार मेरे क्लास के साथी, दोस्त और साथी पादरी मुझसे मिलते थे।

मुझे लगता मैं उनको दोष नहीं दे सकती थी। धर्म बदलने की वजह से मैं उनके लिए सबसे ज्यादा नापसंदीदा बन गई थी। पहले मैं प्रोफेसर, पादरी, चर्च प्लांटर और मिशनरी थी। धर्म के मामले में मैं बेहद कट्टर थी।

बात तब की है जब मैंने पादरियों की एक विशेष शिक्षण संस्था से ग्रेजुएशन के बाद धर्मशास्त्र में मास्टर डिग्री ली ही थी। इसके छह महीने बाद ही मेरी मुलाकात एक महिला से हुई जो सऊदी अरब में काम करती थी और वह इस्लाम अपना चुकी थी। मैंने उस महिला से जाना कि इस्लाम में महिलाओं को किस तरह की हैसियत और अधिकार दिए गए हैं? उसका जवाब जानकर मुझे बेहद हैरत हुई। दरअसल मैं नहीं जानती थी कि इस्लाम में महिलाओं को इतना ऊंचा मुकाम दिया गया है। मैंने उससे अगला सवाल अल्लाह और मुहम्मद सल्ल. से संबंधित पूछा। उसने मुझे बताया कि वह मुझे इस्लामिक सेन्टर ले जाएगी ताकि वहां मेरे सवाल का बेहतर जवाब मिल सके।

जब मैं ईसाई थी तब प्रार्थना के दौरान हम जीसस से बुरी ताकतों और शैतान से हिफाजत करने की प्रार्थना करते थे। हमें यही बताया गया था कि इस्लाम शैतान का धर्म है। मुसलमानों को लेकर मेरा ऐसा ही नजरिया था। लेकिन इस्लामी केंद्र में मुसलमानों से मिलकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। उनका अंदाज और व्यवहार सीधा व सरल था। कोई बनावटीपन नहीं। ना किसी तरह का भय और परेशानी का दिखावा, ना कोई मनोवैज्ञानिक

चालाकी और ना ही किसी तरह का अचेतन प्रभाव डालने की कोशिश। उन लोगों में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला बल्कि उन्होंने कहा- आप घर पर बाइबल के अध्ययन के साथ-साथ कुरआन का अध्ययन भी करें। मुझे तो इनके इस तरह के व्यवहार पर बेहद आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुझे कुछ किताबें दी और कहा कि अगर इनको पढ़ने के बाद उनके दिमाग में किसी तरह के सवाल उठते हैं तो उनसे जवाब जाना जा सकता है। मैंने पहली बार इस्लाम पर किसी मुस्लिम की लिखी किताब पढ़ी थी। इससे पहले मैंने इस्लाम पर ईसाईयों द्वारा लिखित किताबें ही पढ़ी थीं। अगले दिन मैं फिर से इस्लामी केंद्र गई और वहां मैंने कई सवाल पूछते हुए करीब तीन घण्टे गुजारे। और फिर मैं हफ्ते में एक बार इस्लामी केंद्र जाने लगी। इस तरह मैंने इस्लाम से जुड़ी तकरीबन बारह किताबें पढ़ डाली। इन किताबों का अध्ययन करने पर मुझे समझ में आया कि मुसलमानों को ईसाईयत की तरफ लाने के मामले में ही सबसे ज्यादा मेहनत क्यों करनी पड़ती है। आखिर मुसलमान धर्म बदलने के मामले में इतने कठोर क्यों हैं? क्या आप जानना चाहते हैं वे ऐसे क्यों हैं? क्योंकि उनको ऑफर करने के लिए कुछ होता ही नहीं? क्योंकि मुसलमान सीधे अल्लाह से जुड़ाव रखते हैं, जो गुनाहों को माफ करने वाला है। जिसका वादा है परलोक का अनंत सुख और कामयाबी देने का।

इस्लाम को समझने के दौरान स्वाभाविक रूप से मेरा पहला सवाल यही था कि अल्लाह का अस्तित्व किस रूप में है जिसकी मुसलमान इबादत करते हैं? दरअसल ईसाई के रूप में हमें पढ़ाया जाता है कि यह एक अलग गॉड है, जो झूठा है। जबकि सच्चाई यह है कि मुसलमान जिस ईश्वर की इबादत करते हैं वह सर्वज्ञ-सब कुछ जानने वाला, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। यह सिर्फ एक है और उसकी शक्तियों में उसका कोई साझी नहीं है। और ना ही कोई उसके बराबर है।

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि चर्च के शुरूआती तीन सौ सालों में बिशप ईसा मसीह के बारे में ऐसा ही बताते थे जैसा कि आज मुस्लिम यकीन रखते हैं कि ईसा अलै. ईश्वर के पैगंबर और उपदेशक थे। सम्राट

कॉन्स्टेन्टीन ने ट्रिनिटी (ईश्वर को तीन रूपों में मानने की ईसाइयों की अवधारणा) ईजाद की। उसे ईसाई धर्म की कोई जानकारी नहीं थी। उसी ने ईसाईयत को मूर्तिपूजक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया। वक्त की कमी के कारण मैं इस विषय की गहराई में नहीं जा पाई हूं, लेकिन
इंशा अल्लाह मैं यह साबित करूंगी कि ट्रिनिटी बाइबल के कई अनुवादों में नहीं है और ना ही मूल ग्रीक और हिब्रू भाषा की बाइबल में यह अवधारणा पाई जाती है।

मेरी दूसरी जिज्ञासा मुहम्मद सल्ल. को लेकर थी। मुहम्मद सल्ल.कौन हैं? मैंने जाना कि मुसलमान मुहम्मद सल्ल. की इबादत नहीं करते जिस तरह कि ईसाई ईसा मसीह की करते हैं। वे ईश्वर और बंदों के बीच मध्यस्थ नहीं है बल्कि मुसलमानों को मुहम्मद सल्ल. से प्रार्थना करने के लिए मना किया गया है। मुसलमान तो अपनी इबादत में मुहम्मद सल्ल. पर रहम और करम करने की अल्लाह से दुआ करते हैं, उसी तरह जिस तरह मुसलमान इब्राहीम अलै. के लिए अल्लाह से दुआ करते हैं। मुहम्मद सल्ल. तो अल्लाह के आखरी पैगबंर और संदेशवाहक हैं। वे अंतिम पैगंबर है। यही वजह है कि पिछले चौदह सौ अट्ठारह सालों में कोई पैगबंर नहीं आया। इनका मैसेज पूरी इंसानियत के लिए है जबकि मूसा और ईसा अल्ल. सिर्फ यहूदियों की तरफ भेजे गए पैगबंर थे। लेकिन इन सबका एक ही मैसेज था–

तुम्हारा रब सिर्फ एक ही है और सिवाय उसके कोई कोई ईश्वर नहीं है। (मार्क 12: 29)

क्योंकि एक ईसाई के रूप में मेरी जिंदगी में प्रार्थना की काफी अहमियत थी, इसलिए मेरी दिलचस्पी और उत्सुकता इस बात में भी थी कि मुसलमानों का प्रार्थना का तरीका क्या है। दरअसल एक ईसाई के रूप में हम मुसलमानों के अन्य पहलुओं की तरह उनके इस पहलू को भी नजरअंदाज ही करते थे। हम सोचते थे जैसा कि हमें सिखाया भी गया था कि मुसलमान मक्का स्थित काबा की इबादत करते हैं, उसी के सामने झुकते हैं और यही उनके झूठे ईश्वर का केंद्र बिंदु है। लेकिन मुझे सच्चाई जानकर हैरत हुई कि

मुसलमान तो उस तरीके से इबादत करते हैं जो तरीका खुद ईश्वर की तरफ से बताया गया है। उनकी प्रार्थना के शब्दों में उसी एक ईश्वर की महिमा और उसी का गुणगान है। इबादत करने के लिए किस तरह की पवित्रता होना जरूरी है, यह भी उसी ईश्वर ने गाइड किया है। वह ईश्वर बहुत पवित्र है और यह उचित नहीं है कि लोग अपने-अपने हिसाब से मनमाने तरीके से उसकी इबादत करे बल्कि ज्यादा उचित यह है कि ईश्वर हमें गाइड करे कि उसकी प्रार्थना किस तरह की जानी चाहिए।

आठ साल तक धार्मिक अध्ययन के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंच गई थी कि इस्लाम सच्चा धर्म है। लेकिन मैंने अभी तक इस्लाम कबूल नहीं किया था क्योंकि अभी तक इस्लाम दिल की गहराइयों में नहीं उतरा था। मैं लगातार प्रार्थना करती, बाइबल का अध्ययन करती और इस्लामी केंद्र में भी लेक्चर में शामिल होती। मैं पूरी गंभीरता से ईश्वर की हिदायत को तलाश रही थी। मैं जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं करना चाहती थी। और यह भी सच है कि अपना धर्म बदल लेना कोई आसान काम भी नहीं है।

मुझे लगातार बेहद हैरत होती रही कि इस्लाम के बारे में हमें क्या बताया जाता है जबकि इस्लाम सही मायने में कितना अच्छा मजहब है। मेरे मास्टर लेवल कोर्स के दौरान एक प्रोफेसर जो इस्लाम विषय के ऑथोरिटी माने जाते थे, मैं उनका सम्मान करती थी, लेकिन वे और उन जैसे कई ईसाई इस्लाम को लेकर गलतफहमियों के शिकार रहते हैं।

एक बार फिर ईश्वर से हिदायत की दुआ के दो माह बाद एक दिन मुझे महसूस हुआ मानों मेरे अंदर कोई एक खास बूंद टपकी हो। मैं उठ खड़ी हुई और यह पहला मौका था जब मैंने अल्लाह शब्द बोला। मैंने दुआ की- ऐ अल्लाह मेरा यकीन है कि तू सिर्फ एक है और तू ही सच्चा गॉड है। उस दिन मैंने एक खास सुकून का एहसास किया और उस दिन इस्लाम अपनाने के बाद पिछले चार सालों में मैंने इस्लाम अपनाने के अपने फैसले पर कभी खेद महसूस नहीं किया। इस्लाम अपनाने के बाद मुझे कई तरह के इम्तिहानों से गुजरना पड़ा। मुझे नौकरी से निकाल दिया गया। उस वक्त मैं दो बाइबल कॉलेजों में पढ़ाती थी। मेरे पूर्व के क्लास के

साथियों, प्रोफेसरों और मेरे साथी पादरियों ने मेरा बहिष्कार कर दिया। मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया और मेरे अपने ही युवा बच्चे मुझे शक की नजरों से देखने लगे। गवर्नमेंट ने मुझ पर संदेह किया। बिना मजबूत ईमान के किसी की वश की बात नहीं कि वह इस तरह की शैतानी ताकतों का मुकाबला कर सके। अल्लाह ही ने मुझे यह सब सहन करने की ताकत दी वरना मेरे बूते की बात ना थी। अल्लाह का मुझ पर बहुत बड़ा एहसान है कि उसने मुझे मुस्लिम बनाया। अब मुस्लिम के रूप में ही जीना चाहती हूं और मुस्लिम के रूप में मरना।

***कहो-मेरी नमाज और मेरी कुर्बानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है। उसका कोई साझी नहीं है। मुझे तो इसी का आदेश मिला है और सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) मैं हूं। (कुरआन-6:162-163)***

(सिस्टर खदीजा वाट्सन अभी जेद्दा स्थित एक दावत सेंटर में महिलाओं को पढ़ाने का काम कर रही हैं।)

# इब्राहिम खलील अहमद

## इजिप्ट

*इब्राहिम खलील अहमद जिनका पुराना नाम खलील फिलोबस था, पहले इजिप्ट के कॉप्टिक पादरी थे। फिलोबस ने धर्मशास्त्र में एम. ए. किया। इस्लाम को गलत रूप में पेश करने के मकसद से फिलोबस ने इसका अध्ययन किया। वे इस्लाम में कमियां ढूढ़ना चाहते थे लेकिन हुआ इसका उलटा। वे इस्लाम से बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने अपने चार बच्चों के साथ इस्लाम कबूल कर लिया।*

*इस्लाम में एक ईश्वर की अवधारणा से मैं बेहद प्रभावित हुआ और मुझे इस्लाम की यह सबसे बड़ी खूबी लगी। अल्लाह एक है। उसका कोई साझी नहीं है। इस्लाम की इस अवधारणा से मैं उस एक ईश्वर का बन्दा बन गया जिसका कोई हमसर नहीं। एक ईश्वर में भरोसा व्यक्ति को खुद्दार बनाता है और समस्त मानव जाति को हर तरह की दासता से मुक्ति देता है और यही सही मायनों में आजादी है।*

# इस्लाम में एकेश्वरवाद से मैं बेहद प्रभावित हुआ

मैं 13 जनवरी 1919 को अलेक्जेन्डेरिया में पैदा हुआ था। मैंने सैकण्डरी तक की शिक्षा अमेरिकन मिशन स्कूल से हासिल की। 1942 में डिप्लोमा हासिल करने के बाद मैंने धर्मशास्त्र में स्पेशलाइजेशन के लिए यूनिवर्सिटी में एडमिशन लिया। धर्मशास्त्र में प्रवेश लेना आसान नहीं था। चर्च की खास सिफारिश पर ही इस विभाग में एडमिशन लिया जा सकता था और इसके लिए एक मुश्किल परीक्षा से भी गुजरना पडता था। मेरे लिए अलेक्जेन्डेरिया अलअटारिन चर्च ने सिफारिश की और लॉअर इजिप्ट की चर्च असेम्बली ने भी मेरा इम्तिहान लिया। असेम्बली ने धर्म के क्षेत्र में मेरी योग्यता का अंकन किया। नोडस चर्च असेम्बली ने भी मेरी सिफारिश की। इस असेम्बली में सूडान और इजिप्ट के पादरी थे। कुल मिलाकर मुझे धर्मशास्त्र विभाग में एडमिशन के लिए कड़े इम्तिहानों से गुजरना पडा। 1944 में बोर्डिंग स्टूडेंट के रूप में धर्मशास्त्र विभाग में एडमिशन के बाद मैंने 1948 तक ग्रेजुएशन के दौरान अमेरिकन और इजिप्टियन टीचर्स से अध्ययन किया।

शिक्षा पूरी होने पर मुझे यरूशलम में नियुक्त किया जाना था लेकिन इस्राइल और फिलीस्तीन के बीच युद्ध छिड़ जाने के कारण में वहां नहीं गया और मुझे उसी साल इजिप्ट के ही असना कस्बे में भेज दिया गया। इसी साल मैंने अमेरिकन यूनिवर्सिटी से थिसिस के लिए अपना पंजीयन कराया। मेरी थिसिस का सब्जेक्ट था–'मुसलमानों के बीच ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां।' इस्लाम से मेरा परिचय तब हुआ था जब मैंने धर्मशास्त्र का अध्ययन शुरू किया था। वहां मैंने इस्लाम और मुसलमानों के विश्वास और विचारधारा को डगमगाने और भ्रमित करने व उनके धर्म से संबंधित

उनके बीच गलतफहमियां पैदा करने के तरीकों का अध्ययन किया। मैंने अमेरिका की प्रिंसटोन यूनिवर्सिटी से 1952 में एम ए किया। फिर मैं एसूट में धर्मशास्त्र विभाग में टीचर नियुक्त हुआ। मैं स्टूडेंट को इस्लाम से जुड़ी वे बातें ही पढ़ाता था जो ईसाई मिशनरी मुसलमानों के खिलाफ आम लोगों के बीच बताती थीं। इस्लाम विरोधी ताकतों की ओर से फैलाई जाने वाली झूठी भ्रांतियों को बताकर इस्लाम का गलत रुप स्टूडेंट के सामने पेश करता था। इस्लाम संबंधी अपनी इस क्लास के दौरान मुझे महसूस होने लगा कि मुझे इस्लाम संबंधी अपनी जानकारी को बढाना चाहिए।

मैंने तय किया कि मुझे ईसाई मिशनरियों की इस्लाम के खिलाफ लिखी किताबों के अलावा मुस्लिम लेखकों की किताबें भी पढ़नी चाहिए। मैंने कुरआन को समझकर पढ़ने का भी निर्णय किया। ज्यादा से ज्यादा इस्लाम की जानकारी हासिल करने के पीछे मेरा मकसद इस्लाम में और खामियां निकालना था। इस अध्ययन का नतीजा मेरी सोच के बिल्कुल उलट निकला। मैं अजीब कश्मकश में फंस गया। मेरे मन में अंतर्द्वंद्व चलने लगा क्योंकि अब तक जो कुछ मैं इस्लाम की कमियां लोगों को बताता था ऐसा मैंने कुरआन के अध्ययन में नहीं पाया। मेरे आरोप मुझे निराधार लगने लगे। मैं इस सच्चाई का सामना करने से कतराता रहा और मैंने इस्लाम का नेगेटिव अध्ययन कराना जारी रखा।

1954 में मैं जर्मन स्विस मिशन के महासचिव के रूप में आसवान गया। वहां भी मुझे इस्लाम संबंधी भ्रांतियां पैदा करनी थी जो मेरे मिशन का हिस्सा थी। एक होटल में मिशनरी की ओर से कॉन्फ्रेस का आयोजन किया गया। इस मौके पर मैंने इस्लाम को लेकर कई गलतफहमियां पैदा की। अपने लेक्चर के अंत में मेरे मन में अंतर्द्वंद्व शुरू हो गया। मैं अपनी इस भूमिका के बारे में सोचने लगा। मैं अपने आपसे सवाल करने लगा कि सच्चाई जानने के बावजूद मैं आखिर झूठ क्यों बोल रहा हूं? आखिर मैं सच्चाई से मुंह क्यों मोड़ रहा हूं? इसी कश्मकश के बीच मैं कॉन्फेंस खत्म होने से पहले ही वहां से अपने घर के लिए रवाना हो

गया। मैं मंथन करने लगा।

इस बीच जब मैं एक पार्क की तरफ जा रहा था तो मैंने रेडियो में कुरआन की यह आयत सुनी–

***कह दो-मेरी ओर ईश्वर ने ज्ञान भेजा है कि जिन्नों के एक गिरोह ने कुरआन सुना, फिर जिन्नों ने कहा कि हमने एक मनभाता कुरआन सुना जो भलाई और सूझबूझ का मार्ग दिखाता है; इसलिए हम उस पर ईमान ले आए और अब हम कभी किसी को अपने रब का साझी नहीं ठहराएंगे।***

*( 72:1-2 )*

***और यह कि जब हमने हिदायत की बात सुनी तो उस पर ईमान ले आए। अब जो कोई अपने रब पर ईमान लाएगा, उसे न तो किसी हक के मारे जाने का भय होगा और न किसी जुल्म ज्यादती का। ( 72:13 )***

कुरआन की यह आयतें सुनने के बाद उस रात मुझे सुकून का एहसास हुआ। घर पहुंचने के बाद मैं पूरी रात लाइब्रेरी में बैठकर कुरआन पढ़ता रहा। मेरी पत्नी ने मुझसे पूरी रात बैठे रहने का कारण पूछा लेकिन मैंने उससे मुझे अकेले छोड़ देने को कहा। मैं काफी देर तक कुरआन की इस आयत पर गौर व फिक्र करता रहा–

***यदि हमने इस कुरआन को किसी पर्वत पर भी उतार दिया होता तो तुम अवश्य देखते अल्लाह के भय से वह दबा हुआ और फटा जाता है। ये मिसालें हम लोगों के लिए इसलिए पेश करते हैं कि वे सोच विचार करें। ( 59: 21 )***

मैंने इन आयतों पर भी चिंतन किया–

***तुम ईमान वालों का दुश्मन सब लोगों से बढकर यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ईमान वालों के लिए मित्रता में सबसे निकट उन लोगों को पाओगे जिन्होंने कहा कि -हम ईसाई हैं। यह इस कारण कि ईसाईयों में बहुत से धर्मज्ञाता और संसार त्यागी संत पाए जाते हैं। और इस कारण कि वे अहंकार नहीं करते। जब वे उसे***

*सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि उनकी आखें आंसुओं से छलकने लगती हैं । इसका कारण यह है कि उन्होंने सच्चाई को पहचान लिया है। वे कहते हैं-हमारे रब, हम ईमान ले आए। इसलिए तू हमारा नाम गवाही देने वालों में लिख ले। और हम अल्लाह पर और जो सत्य हमारे पास पहुंचा है उस पर ईमान क्यों नहीं लाएं, जबकि हमें उम्मीद है कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ जन्नत में दाखिल करेगा।*

*( 5 : 82-84 )*

मैंने इन आयात पर भी गौर किया-

**तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं जो उस रसूल उम्मी का अनुसरण करते हैं, जिसके बारे में वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है। उनके लिए अच्छी स्वच्छ चीजों को हलाल और बुरी अस्वच्छ चीजों को हराम ठहराता है और उन पर से उनके वह बोझ उतारता है, जो अब तक उन पर लदे हुए थे। उन बन्धनों को खोलता है, जिनमें वे जकड़े हुए थे। अत जो लोग उस पर ईमान लाए, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस हिदायत के मार्ग पर चले जो वो लेकर आए, तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।**

**कहो-ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूं जो आकाशों और धरती के राज्य का स्वामी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वही जीवन देता है और वही मौत देता है। अत अल्लाह और उसके रसूल, उस उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो खुद अल्लाह और उसके कलाम पर ईमान रखता है। उसका अनुसरण करो, ताकि तुम सही राह पा लो। ( 7: 157-158 )**

उस रात मैंने सच्चाई जान ली और फिर इस्लाम कुबूल करने का फैसला कर लिया। सुबह मैंने अपने इस फैसले के बारे में अपनी पत्नी को बताया। मेरे तीन बेटे और एक बेटी हैं। मेरी पत्नी को यह एहसास होने पर कि मैं जल्दी ही इस्लाम कुबूल करने जा रहा हूं तो उसने बिना देरी किए

ईसाई मिशनरी के मुखिया से मदद मांगी और मुझे रोकने को कहा। मिशनरी के मुखिया स्विट्जरलेंड के मॉन्सियोर शोविटस बहुत चतुर व्यक्ति थे। मॉन्सियोर के पूछने पर मैंने उनको साफ साफ बता दिया कि मैं अब इस्लाम अपनाना चाहता हूं, यह जानकर उन्होंने मुझसे कहा कि ऐसा करने पर तुम्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा और इसके लिए तुम खुद जिम्मेदार बनोगे। मैंने तुरंत अपना इस्तीफा उनको पकड़ा दिया। उन्होंने मुझ पर अपना फैसला वापस लेने का दबाव बनाया और मेरी मानसिकता बदलने की काफी कोशिश की लेकिन मैं अपने फैसले पर अटल था। मुझे अपने फैसले पर अडिग देख मॉन्सियोर ने मेरे बारे में अफवाह उड़ा दी कि मैं पागल हो गया हूं। फिर तो मुझे बेहद मुश्किलों का सामना करना पड़ा। मुसीबतों से परेशान होकर मैं आसवान छोड़कर वापस काहिरा आ गया। काहिरा में मेरा परिचय एक सम्मानीय और अच्छे प्रोफेसर से हुआ। उन्होंने मेरे बारे में बिना कुछ जाने मुसीबतों और परेशानियों के दौर में मेरा साथ दिया। मैंने उनके सामने अपना परिचय एक मुस्लिम के रूप में दिया था हालांकि तब तक मैंने ऑफिसियल रूप से इस्लाम कुबूल नहीं किया था। डॉ मुहम्मद अब्दुल मोनेम अल जमाल नाम के यह व्यक्ति कोषागार में सचिव थे। उनकी इस्लामिक अध्ययन में जबरदस्त दिलचस्पी थी और वे कुरआन का अमेरिकी अंग्रेजी में अनुवाद कराने के इच्छुक थे। उन्होंने कुरआन के अनुवाद के लिए मुझसे मदद चाही क्योंकि मेरी अंग्रेजी अच्छी थी और मैं अमेरिकन यूनिवर्सिटी से एम. ए. कर चुका था। वे यह भी जानते थे कि मैं कुरआन, तोरात और बाइबिल का तुलनात्मक अध्ययन कर रहा हूं। मैंने उनकी कुरआन के अनुवाद में मदद की। इस बीच जब डॉ. जमाल को पता चला कि मैंने नौकरी छोड़ दी है और इन दिनों मैं बेरोजगार हूं तो उन्होंने मुझे काहिरा में ही नौकरी दिलाने में मेरी मदद की। और इस तरह मेरी गाड़ी फिर से पटरी पर आ गई। इस दौरान पत्नी से दूर रहने पर उसको लगा कि मैंने उसको भुला दिया है जबकि उससे दूरी इस बीच की उथल पुथल के कारण हुई थी। इस्लाम कुबूल करने के ऐलान का इरादा मैंने कुछ वक्त

के लिए टाल दिया क्योंकि मैं इससे उत्पन्न होने वाली स्थितियों से निपटने के लिए खुद को और मजबूत बनाना चाहता था। 1955 में मैंने अपना इस्लामिक अध्ययन और विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन पूरा कर लिया। इस बीच मेरा जीवन सहज हो गया था। मैंने नौकरी छोड़कर स्टेशनरी निर्यात का बिजनेस शुरू कर दिया था। बिजनेस में मैंने अपनी जरूरत के मुताबिक अच्छा पैसा कमाया। इस तरह सैट होने के बाद मैंने इस्लाम कुबूल करने और इसका ऐलान करने का निश्चय किया। और फिर 25 दिसंबर 1959 को मैंने इजिप्ट में अमेरिकन मिशन के मुखिया डॉ थॉमसन को टेलीग्राम के जरिए इस्लाम कुबूल करने की जानकारी दी। मैंने डॉ. जमाल को अपनी वास्तविक दास्तां बताई तो वे आश्चर्यचकित हुए क्योंकि वे अब तक इससे अनजान थे। इस्लाम कुबूल करने के ऐलान के साथ ही मेरे सामने नई तरह की परेशानियां आनी शुरू हो गईं। मिशनरी में मेरे साथ काम करने वाले मेरे पूर्व सात साथियों ने मुझ पर इस्लाम कुबूल न करने का दबाव बनाया। मैं अपने इरादे पर अडिग था। उन्होंने मुझे मेरी पत्नी से अलग करने की धमकी दी। मैंने साफ कह दिया– वह अपना फैसला लेने के लिए आजाद है। मुझे मारने की धमकी दी गई। जब उनकी बातों का मुझ पर असर नहीं हुआ तो उन्होंने मेरे पास मेरे एक पुराने खास दोस्त और मेरे साथ काम कर चुके सहकर्मी को भेजा। वह मेरे पास आकर रोने लगा। मैंने उसके सामने कुरआन की यह आयत पढ़ी–

***जब वे उसे सुनते हैं जो रसूल पर अवतरित हुआ है तो तुम देखते हो कि उनकी आंखें छलकने लगती हैं। इसका कारण यह है कि उन्होने सत्य को पहचान लिया है । वे कहते हैं -हमारे रब हम ईमान लाए। अत तू हमारा नाम गवाही देने वालों में लिख ले। और हम अल्लाह पर और जो सत्य हमारे पास पहुंचा है उस पर ईमान क्यों नहीं लाएं, जबकि हमें उम्मीद है कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ जन्नत में दाखिल करेगा। ( 5: 83-84*** )

मैंने उससे कहा– कुरआन सुनने के बाद तुम्हें विनम्र होकर ईश्वर के

सामने झुक जाना चाहिए और सच्चे धर्म को तुम्हें भी अपना लेना चाहिए। अपनी बातों का असर न होता देख वह मुझे अकेला छोड़ चला गया। और फिर मैंने जनवरी 1960 में आधिकारिक रूप से इस्लाम कुबूल करने का ऐलान कर कर दिया।

इस्लाम कुबूल करने का ऐलान करते ही मेरी पत्नी मुझे छोड़ गई और अपने साथ घर का सारा फर्नीचर ले गई। मेरे तीन बेटे और एक बेटी मेरे साथ रहे और उन्होंने भी इस्लाम कुबूल कर लिया। इस्लाम कुबूल करने में सबसे ज्यादा उत्साहित मेरा बड़ा बेटा इसाक था जिसने अपना इस्लामिक नाम ओसामा रख लिया। ओसामा ने फिलोसोफी में डॉक्टरेट की और वह पेरिस की यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बन गया। घर छोड़ने के छह साल बाद मेरी पत्नी वापस लौट आई इस शर्त पर कि वह अपना धर्म नहीं छोड़ेगी। मैंने उसे अपना लिया क्योंकि इस्लाम में इसकी इजाजत है। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हें दबाव डालकर मुस्लिम नहीं बनाना चाहता, बल्कि चाहता हूं कि इस्लाम को समझने के बाद तुम ही इस मामले में फैसला लो। कुछ वक्त बाद वह भी इस्लाम के मूल्यों में भरोसा करने लगी लेकिन अपने घर वालों के डर से इस्लाम अपनाने का ऐलान नहीं कर पाई। लेकिन हमारा व्यवहार उसके साथ मुस्लिम औरत की तरह है। वह रमजान के महीने के रोजे रखती है। मेरे सभी बच्चे भी रोजे रखते हैं और नमाज अदा करते हैं। मेरी बेटी नाजवा कॉमर्स की स्टूडेंट है, बेटा जोसेफ डॉक्टर और जमाल इंजीनियर है। 1961 से अब तक मैं इस्लाम पर और ईसाई मिशनरियों की इस्लाम के खिलाफ मुहिम पर कई किताबें लिख चुका हूं। 1973 में मैंने हज किया। मैं इस्लाम पर तकरीर करता हूं। मैंने कई यूनिवर्सिटी और समाजसेवी संस्थाओं में सेमिनार का आयोजन किया। मैं अपना पूरा वक्त इस्लाम के लिए खर्च कर रहा हूं। कुरआन और पैगम्बर मुहम्मद सल्ललाहो अलेहेवसल्लम की जीवनी का अध्ययन करने पर इस्लाम के प्रति मेरा यकीन पुख्ता बनता गया। इस्लाम से जुड़ी सारी गलतफहमियां दूर हो गईं। इस्लाम में एक ईश्वर की अवधारणा से मैं बेहद प्रभावित हुआ और मुझे इस्लाम की यह सबसे बड़ी खूबी लगी।

अल्लाह एक है। उसका कोई साझी नहीं है। इस्लाम की इस अवधारणा से मैं उस एक ईश्वर का बन्दा बन गया जिसका कोई हमसर नहीं। एक ईश्वर में भरोसा व्यक्ति को खुद्दार बनाता है और समस्त मानव जाति को हर तरह की दासता से मुक्ति देता है और यही सही मायनों में आजादी है। मैं इस्लाम में माफी देने के नियम और ईश्वर और बन्दे के बीच सीधे संबंध से बेहद प्रभावित हुआ।

अल्लाह कहता है –

**कह दो – *ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपने आप पर ज्यादती की है अल्लाह की दयालुता से निराशा न हो। निसंदेह अल्लाह सारे ही गुनाहों को माफ कर देता है। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। ( 39: 53 )***

# जेसॉन क्रुज
अमेरिका

*मैंने चर्च से इस्तीफा दे दिया और अल्लाह का शुक्र है कि मैं तभी से मुसलमान हूं। इस्लाम कुबूल करने के साथ ही  मेरी जिंदगी में अच्छे बदलाव आए।*
*-जेसॉन क्रुज, अमेरिका*

*मैं अपनी इस बुरी जिंदगी का आपके सामने जिक्र इसलिए कर रहा हूं कि मैं आपको यह बात जोर देकर बताना चाहता हूं कि अगर ईश्वर चाहे तो बुरे हालात में भी आपको राह दिखाकर नारकीय जिंदगी से बाहर निकाल सकता है। आपको सही राह पर ला सकता है।*

# इस्लाम ने मेरी जिंदगी बदल दी

अल्लाह का शुक्र है कि मुझे अल्लाह ने 2006 में इस्लाम रूपी बेशकीमती ईनाम से नवाजा। जब भी कोई मुझसे यह पूछता है कि मैं कैसे इस सच्चे धर्म की तरफ आया तो मैं कहता हूं कि यह मेरी काबलियत नहीं बल्कि यह अल्लाह ही की हिदायत और रहमत है कि उसने मुझे सच्ची राह दिखाई। बिना अल्लाह की मर्जी और रहमत के कोई इस सच्चे मार्ग की तरफ नहीं आ सकता।

मैं न्यूयॉर्क के एक कैथोलिक परिवार में पैदा हुआ। मेरे माता और पिता रोमन कैथोलिक थे। हम इतवार को चर्च जाते थे। पहले मैंने ईसाई धर्म की शिक्षा ली, ईसा मसीह के स्मरणार्थ पहले भोज में शामिल हुआ और फिर मैंने रोमन कैथोलिक चर्च की सदस्यता कुबूल कर ली। जब मैं जवान हुआ तो मुझे परमेश्वर की ओर से मार्गदर्शन के संकेत का एहसास होने लगा। इसका अर्थ मैंने यह लगाया कि यह मेरे लिए रोमन कैथोलिक पादरी बनने का मैसेज है। मैंने यह बात अपनी मां को बताई तो वह बहुत खुश हुई और वह मुझे हमारे इलाके के पादरी के पास ले गई।

इसे दुर्भाग्य मानें या सोभाग्य कि यह ईसाई पादरी अपने पेशे से खुश नहीं था और इसने मुझे पादरी बनने के विचार से ही दूर रहने की सलाह दी। इससे मैं विचलित हुआ। इस बीच परमेश्वर के शुरूआती मैसेज के एहसास को भूला देने, अपनी मूर्खता और किशोर अवस्था के चलते मैंने एक अलग ही रास्ता चुन लिया। बदकिस्मती से जब मैं सात साल का था तो मेरा परिवार बिखर गया। मेरे माता-पिता के बीच तलाक हो गया और मैं अपने पिता से दूर हो गया।

पन्द्रहवें साल में पहुंचने पर मैं पार्टियों और नाइट क्लबों में जाने में ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा। पहले मैंने वकील बनने का ख्वाब संजोया

और फिर  राजनेता बनने के सपने देखने लगा ताकि अच्छी लाइफ स्टाइल जी सकूं। हाई स्कूल पास करने के बाद मैं कॉलेज पहुंचा लेकिन मैं वहां पढ़ नहीं पाया और वहां से ऐरीजोना (जहां मैं अब तक लगातार रहा) आया और यहां डिग्री पूरी होने तक रहा। एरीजोना में एक दिन मेरी तबियत ज्यादा खराब हो गई। दरअसल मैं वहां घर से भी ज्यादा बुरे लोगों की संगत में फंस गया था। शिक्षा कम होने की वजह से मुझे छोटे-मोटे काम करने पड़े। मैं नशे, बदचलनी और नाइट क्लब में जाने की आदत का शिकार हो गया। इसी दौरान मैं पहली बार एक मुस्लिम शख्स से मिला। वह एक नेक इंसान था और विदेशी छात्र के रूप में शिक्षा हासिल कर रहा था। वह मेरे दोस्तों के साथ पार्टी वगैरह में आता था। मैंने उससे इस्लाम पर तो चर्चा नहीं की लेकिन उससे उसके कल्चर को लेकर सवाल किए जिसका जवाब उसने खुलकर दिया। मेरी जिंदगी का यह बुरा दौर कुछ सालों तक चला। मैं इस जिंदगी के बारे में ज्यादा नहीं बताना चाहता। मुझे बहुत से आघात लगे। मेरे जानकार लोग मारे गए। मुझे चाकुओं से गोदा गया और भी कई जख्म मुझे मिले। यह कोई ड्रग्स के खतरों की कहानी नहीं है। मैं अपनी इस बुरी जिंदगी का आपके सामने जिक्र इसलिए कर रहा हूं कि मैं आपको यह बात जोर देकर बताना चाहता हूं कि अगर ईश्वर चाहे तो बुरे हालात में भी आपको राह दिखाकर नारकीय जिंदगी से बाहर निकाल सकता है। आपको सही राह पर ला सकता है।

मैंने सुपर पावर के साथ फिर से जुड़ाव महसूस किया और इसी दौरान नशीली चीजों का सेवन करना छोड़ दिया। ईश्वरीय कृपा के चलते ही मैं इन बुराइयों से बच पाया। दरअसल मैं परमेश्वर से जुड़ाव खो चुका था जो कभी पहले मेरा उससे रहा था। मैं फिर से सच्चे ईश्वर की तलाश में जुट गया। बदकिस्मती से मैं पहली बार में सच्चाई को नहीं पा सका और मैंने हिन्दू धर्म अपना लिया। हिन्दू धर्म में मुझे इस बात ने प्रभावित किया था कि आखिर हमें कष्ट क्यों झेलने पड़ते हैं। मैंने पूरी तरह हिन्दू धर्म अपना लिया, यहां तक कि मैंने अपना नाम भी बदलकर हिन्दू नाम रख लिया। इस बदलाव से मैं नशीली चीजों के सेवन से दूर रहा और मेरी जिंदगी

सकारात्मक दिशा की तरफ चलने लगी। लेकिन मैं फिर से एक चुभन महसूस करने लगा। मुझे यहां भी सुकून नहीं मिला। सच की तलाश को लेकर मेरे में बेचैनी अभी भी बनी थी। इसी के चलते मैंने हिन्दू धर्म छोड़ दिया और मैं फिर से ईसाई धर्म में आ गया। मुझे महसूस हुआ कि परमेश्वर मेरी सेवाएं एक पादरी के रूप में चाहता है। इसलिए मैंने पादरी के रूप में सेवाएं देने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च में सम्पर्क किया। मुझे न्यू मेक्सिको में मोनेस्टरी में एक पोस्ट के साथ शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा गया। उस वक्त मेरी मां, भाई और बहिन भी एरीजोना आ गए थे और यहां मेरी कई लोगों से अच्छी दोस्ती थी। मैं न्यू मैक्सिको जा नहीं पाया और एरीजोना के ही एक कैथोलिक चर्च से जुड़कर विभिन्न सेमीनार के जरिए मैंने घर रहते हुए ही ईसाईयत का अध्ययन किया। बाद में मैं एरीजोना में ही स्वतंत्र रोमन कैथोलिक चर्च में नियुक्त कर दिया गया। मैंने चर्च से जुड़ी कई सेमीनार अटेंड की और फिर 2005 में मुझे पादरी के रूप में नियुक्त कर दिया गया। मुझे विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच जाकर ईसाईयत का मैसेज देने की जिम्मेदारी दी गई। मेरा काम शहरी क्षेत्र में जाकर विभिन्न धर्मों के लोगों की आस्था, रीति-रिवाजों को समझना और उनको ईसाईयत का मैसेज देना था। मैं अधिकतर ईसाई रीति-रिवाजों का पहले ही अध्ययन कर चुका था और इनसे वाकिफ था। मैंने यहूदी और पूर्वी धर्मों का भी अध्ययन कर लिया था।

जहां में काम करता था वहां नजदीक की गली में ही एक मस्जिद थी। मैंने सोचा कि मेरे लिए अच्छा मौका है कि मैं इस्लाम के बारे में भी सीखूं ताकि विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच संवाद के अपने काम को और मजबूत बना सकूं। मैं टेम्पे मस्जिद गया और वहां मुझे अच्छे लोग मिले। मैंने इस्लाम का अध्ययन करना शुरू कर दिया। जो कुछ मैंने पढ़ा उसने मेरे दिल को बेहद प्रभावित किया। मैं फिर मस्जिद गया और वहां पर मैं एक काबिल टीचर अहमद अल अलकयूम से मिला। ब्रदर अहमद अल अलकयूम अमेरिकन मुस्लिम सोसायटी के रीजनल डायरेक्टर थे। वे मस्जिद में सभी धर्मों के लोगों के लिए एक ऑपन क्लास लेते थे जिसमें

वे इस्लाम का परिचय कराते थे। मैं भी उनकी क्लास में शामिल होने लगा। क्लास में शामिल होने के दौरान ही मुझे यकीन होने लगा कि इस्लाम ही सच्चा धर्म है। और कुछ दिनों बाद ही मैंने इस्लाम का कलमा पढ़कर मैं मुसलमान बन गया।

ब्रदर अहमद अल अलकयूम और शेख अहमद शकीरात दोनों बहुत बड़ी हस्ती हैं और इन्हीं की वजह से मेरा इस्लाम में आना आसान हुआ। मैंने चर्च से इस्तीफा दे दिया और अल्लाह का शुक्र है कि मैं तभी से मुसलमान हूं। इस्लाम कबूल करने के साथ ही मेरी जिंदगी में अच्छे बदलाव आए। पादरी का पद छोड़ने और इस्लाम अपनाने पर मेरे परिवारवालों को बेहद आश्चर्य हुआ। वे कुछ समझ नहीं पाए बल्कि वे तो इस्लाम से भयभीत थे। बाद में उन्हें महसूस हुआ कि कुरआन और सुन्नत के प्रति जबरदस्त भरोसे से मेरा जीवन ज्यादा खुशहाल हुआ है और मेरा घर वालों के साथ बेहतर ताल्लुकात हुए हैं तो फिर उन्हें लगा कि इस्लाम तो अच्छा धर्म है। ब्रदर अहमद जानते थे कि इस्लाम अपनाने के बाद का एक साल मुश्किलों भरा होता है, उन्होंने इस दबाव को झेलने के तरीके सुझाए। मैं कई नवमुस्लिम से भी मिला। मैं अब एक मुस्लिम के रूप में बेहतर तरीके से काम को अंजाम देने वाला बन गया। मैं एक प्रोग्राम का मेनेजर बना। इस प्रोग्राम का मकसद प्रभावित लोगों को अल्कोहल, एड्स और हेपेटाइटिस से बचाना था।

मैं मुस्लिम अमेरिकन सोसायटी का ही स्वयंसेवी नहीं बना बल्कि एरीजोना के मुस्लिम यूथ सेन्टर और अन्य मुस्लिम समाजसेवी संस्थाओं से भी जुड़ गया। मुझे हाल ही टेम्पे मस्जिद के बोर्ड में भी शामिल किया गया है जहां मैंने इस्लाम कुबूल किया था। अब मैं सच्चे मुस्लिम दोस्त ही रखता हूं। अब मैं मौज–शौक से जुड़ी पार्टियों में हिस्सा नहीं लेता। अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं इस्लाम की खिदमत के लिए मेरे पसंदीदा इस्लामी विद्वानों से इस्लाम का ज्यादा से ज्यादा इल्म हासिल करूंगा। आज मैं जो कुछ भी हूं अल्लाह के रहमो करम से हूं और जो कुछ मेरे में कमियां–खामियां रहीं वे मेरी वजह से रहीं।

# जॉर्ज एंथोनी

## श्रीलंका

*जॉर्ज एंथोनी श्रीलंका में कैथोलिक पादरी थे। एंथोनी की इस्लाम कुबूल करने और अपना नाम अब्दुल रहमान रखने की दास्तां बड़ी दिलचस्प है। एक ईसाई पादरी के रूप में उनकी बाइबिल की शिक्षा पर अच्छी पकड़ थी। वे आज भी फर्राटे से बाइबिल की कई आयतों को कोट करते हैं।*

***ईसाईयत, बौद्ध धर्म और अन्य दूसरे धर्मों में ईश्वर द्वारा पैगम्बर भेजे जाने की अवधारणा इतनी स्पष्ट और प्रभावी नहीं है बल्कि कई पैगम्बरों के मामले में ये धर्म खामोश हैं जबकि इस्लाम में सभी पैगम्बरों को मानना और उन्हें पूरा-पूरा सम्मान देना जरूरी है। इस्लाम की यह अवधारणा हर किसी को प्रभावित करती है-जॉर्ज एंथोनी***

# जॉर्ज एंथोनी से बन गए अब्दुल रहमान

जॉर्ज एंथोनी श्रीलंका में कैथोलिक पादरी थे। एंथोनी की इस्लाम कबूल करने और अपना नाम अब्दुल रहमान रखने की दास्तां बड़ी रोचक और दिलचस्प है। एक ईसाई पादरी के रूप में उनकी बाइबिल की शिक्षा पर अच्छी पकड़ थी। वे आज भी फर्राटे से बाइबिल की कई आयतों को कोट करते हैं। बाइबिल अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया कि बाइबिल में कई विरोधाभास हैं। वे सिंहली भाषा में बाइबिल की उन आयतों का जिक्र करते हैं जो संदेहास्पद और विरोधाभाषी हैं।

वे कहते हैं कि बाइबिल में पैगम्बर मुहम्मद सल्ल.की भाविष्यवाणी की गई है। अब्दुल रहमान कहते हैं कि ईसाई ईसा मसीह को गॉड मानते हैं जबकि इसके विपरीत पवित्र बाइबिल में उन्हें एक इंसान के रूप में बताया गया है।

अब्दुल रहमान कहते हैं कि ईसाइयत, बौद्ध धर्म और अन्य दूसरे धर्मों में ईश्वर द्वारा पैगम्बर भेजे जाने की अवधारणा इतनी स्पष्ट और प्रभावी नहीं है बल्कि कई पैगम्बरों के मामले में ये धर्म खामोश हैं जबकि इस्लाम में सभी पैगम्बरों को मानना और उन्हें पूरा-पूरा सम्मान देना जरूरी है। इस्लाम की यह अवधारणा और नजरिया हर किसी को प्रभावित करता है और उस पर अपना असर छोड़ता है।

अब्दुल रहमान कहते हैं कि रोमन कैथोलिक पादरी पर शादी का प्रतिबंध लगाने के पीछे कोई कारण समझ में नहीं आता जबकि ईसाइयों के अन्य कई दूसरे वर्गों के पादरी शादी कर सकते हैं। अब्दुल रहमान ईसाईयत से जुड़े ऐसे ही विरोधाभास और शंकाओं पर विचार मग्न और सोच विचार कर

रहे थे कि इस बीच उन्हें एक ऑडियो कैसेट हासिल हुई। यह ऑडियो कैसेट श्रीलंका के ईसाई पादरी शरीफ डी. एल्विस के बारे में थी जिन्होंने ईसाईयत छोड़कर इस्लाम अपना लिया था। इस्लामिक विद्वान अहमद दीदात की कई ऑडियो कैसेट्स से भी अब्दुल रहमान बेहद प्रभावित हुए। वे लगातार सच्चाई की तलाश में जुटे रहे और फिर एक दिन फादर जॉर्ज एंथोनी इस्लाम अपनाकर अब्दुल रहमान बन गए।

अब्दुल रहमान श्रीलंका के राथ्नापुरा गांव के बांशिदे हैं और वे काटूमायाका चर्च में पादरी के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे थे। दस साल तक पादरी का प्रशिक्षण लेने के बाद ही जॉर्ज को पादरी का यह पद हासिल हुआ था।

अब्दुल रहमान ने अपनी मां को एक खत लिखा जिसमें उन्होंने अपनी मां को इस्लाम से रूबरू कराया। इस्लाम का कई महीनों तक अध्ययन करने के बाद उनकी मां ने भी इस्लाम अपना लिया। अब्दुल रहमान की एकमात्र बहिन ग्रीस में काम करती है। उनके पिता और बहिन अभी तक ईसाई हैं।

अब्दुल रहमान ने सच्चाई अपनाने की खातिर ईसाई पादरी जैसे बेहद सम्मानजनक ओहदे को छोड़ दिया। उन्होंने आध्यात्मिक सुकून हासिल करने के लिए खुशी-खुशी दुनियावी सुख-सुविधाओं को कुर्बान कर दिया। फिलहाल अब्दुल रहमान इस्लाम प्रेजेंटेशन कमेटी ऑफ कुवैत से जुड़कर इस्लामी प्रशिक्षु के तौर पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

# मार्टिन जॉन वेपॉपो

## तंजानिया

***क्रिसमस के ठीक दो दिन पहले प्रधान पादरी मार्टिन जॉन वेपॉपो  ने अपने अनुयायियों की सभा में ऐलान किया कि वे अब ईसाईयत छोड़कर इस्लाम धर्म अपना रहे हैं। यह सुन उनके अनुयायी सदमे में आ गए, ऐसा लगा मानो उन्हें सांप सूंघ गया हो।***

*मुझे इस बात पर आश्चर्य होता कि ईसाईयत, इस्लाम, यहूदी, बोद्ध और अन्य दूसरे धर्म, हर एक का दावा है कि उनका धर्म ही सच्चा धर्म है। आखिर सच्चाई क्या है? कौनसा धर्म सत्य है? मैं सच को तलाशना चाहता था–मार्टिन*

# इस्लाम की खातिर छोड़ दिया ऐशो आराम

23 दिसंबर 1986 का दिन था। क्रिसमस के ठीक दो दिन पहले जब प्रधान पादरी मार्टिन जॉन वेपॉपो ने अपने अनुयायियों की सभा में ऐलान किया कि वे अब ईसाईयत छोड़कर इस्लाम धर्म अपना रहे हैं। यह सुन उनके अनुयायी सदमे में आ गए, ऐसा लगा मानो उन्हें सांप सूंघ गया हो। यह सुनकर चर्च का प्रशासक बौखला गया और उसने जल्दी-जल्दी खिड़की-दरवाजे बंद कर दिए और चर्च के सदस्यों से कहा कि प्रधान पादरी मार्टिन का दिमागी संतुलन गड़बड़ा गया है और वे पागल हो गए हैं। उसने कहा, आखिर उन्होंने बिना कुछ सोचे, यह कैसे कह दिया जबकि कुछ मिनट पहले ही तो वे अपने संगीत वाद्य यंत्रों से लैस अपने चर्च साथियों के साथ संगीत सभा में लीन था! लेकिन वे जानते थे बिशप मार्टिन जॉन वेपॉपो मन से इस फैसले को ले चुके थे और संगीत सभा को तो उन्होंने विदाई पार्टी के रूप में ही एंजॉय किया होगा।

लेकिन सभा में उनके अनुयायियों की प्रतिक्रिया' भी अचंभित करने वाली थी। उन्होंने पुलिस को बुलाया और इस 'पागल शख्स' को वहां से दूर ले जाने को कहा। ये प्रधान पादरी आधी रात तक जेल में रहे और फिर मार्टिन को इस्लाम की तरफ प्रेरित करने वाले शेख अहमद शेख ने आकर आधी रात को रिहा करवाया। इस्लाम अपनाने पर मार्टिन जॉन वेपॉपो के साथ पेश आए कई हादसों में से यह घटना तो एक शुरुआती मामूली घटना मात्र है।

अलकलाम के रिपोर्टर सिम्फीवे सेसन्टी ने, इस लूथरवादी प्रधान पादरी मार्टिन जॉन वेपॉपो जिसने इस्लाम अपनाकर अपना नाम अल हज्ज अबूबक्र

जॉन वेपॉपो रख लिया, से बात की। इसका क्रेडिट जिम्बाब्वे के सूफियान सबेलो को दिया जाना चाहिए जिसने डरबन में वाइबेंक इस्लामी सेंटर में जॉन वेपॉपो की दास्तां सुनने के बाद इस रिपोर्टर को उनसे बात करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रधान पादरी मार्टिन के पास सिर्फ बी.ए और एम.ए. की डिग्री ही नहीं बल्कि यह धर्मशास्त्र में डॉक्टरेट है। जहां तक विदेशी डिग्री का सवाल है तो इस पादरी ने इंग्लैण्ड से चर्च एडमिनिस्ट्रेशन में डिप्लोमा और बाद में बर्लिन, जर्मनी से इस फील्ड में डिग्री हासिल की। यह कोई मामूली पादरी नहीं बल्कि एक ऐसी हस्ती है जो इस्लाम अपनाने से पहले वर्ल्ड काउंसिल ऑफ चर्च के पूर्वी अफ्रीका के जनरल सेक्रेटरी थे और उनके अंडर में तंजानिया, केन्या, उगांडा, ब्रूंडी और इथोपिया व सोमालिया आदि देश आते थे।

यह उस शख्स की दास्तां है जो 61 साल पहले 22 फरवरी को बुकाबो, जिसकी सीमा यूगांडा से लगती है, में पैदा हुआ। पैदा होने के दो साल बाद परिवार वालों ने इनको बपतिस्मा (जल के साथ की जाने वाला एक धार्मिक कार्य जिसके जरिए किसी व्यक्ति को चर्च की सदस्यता दी जाती है) दिलाया। पांच साल की उम्र में एक चर्च के मिनिस्टर की सहायता करता देख उनके पिता फूले नहीं समाते थे और वे अपने बेटे के भविष्य को लेकर आशान्वित थे।

'जब मैं बॉर्डिंग स्कूल में था, तो पिता मुझे पत्र लिखते थे और कहते थे कि वे मुझे पादरी बनाना चाहते हैं। मुझे लिखे गए हर एक खत में वे यह बात दोहराते थे।' याद करते हुए अबूबक्र बताते हैं। लेकिन वे अपनी जिंदगी को खुद के हिसाब से जीना चाहते थे और उनकी ख्वाहिश पुलिस फोर्स में नौकरी करने की थी। लेकिन 25 साल की उम्र में वेपॉपो ने अपने पिता की इच्छा को तरजीह दी। यूरोपीय देशों में जहां 21 साल के बाद बच्चे अपनी मर्जी के मालिक होते हैं, इसके विपरीत अफ्रीका में बच्चों को खुद की मर्जी के बजाय अपने माता-पिता की इच्छा को प्राथमिकता देने की सीख दी जाती है।

'मेरे बेटे! मेरे दुनिया से रुखसत होने से पहले अगर तुम पादरी बन

जाओगे तो मुझे बेहद खुशी होगी।' पिता की इसी ख्वाहिश के चलते 1964 में चर्च एडमिनिस्ट्रेशन में डिप्लोमा करने वे इंग्लैंड चले गए और एक साल बाद बी.ए. की डिग्री के लिए जर्मन गए। और फिर एक साल बाद लौटने पर उन्हें पादरी की जिम्मेदारी दी गई। बाद में वे मास्टर डिग्री के लिए फिर से बाहर गए। वेपॉपो कहते हैं,
'इस दौरान मैं चुपचाप बिना किसी से कोई सवाल किए यह सब कुछ करता जा रहा था।' जब उन्होंने डॉक्टरेट करना शुरू किया तो वे सवाल पूछने लगे। 'मुझे इस बात पर आश्चर्य होता कि ईसाईयत, इस्लाम, यहूदी, बोद्ध और अन्य दूसरे धर्म, हर एक का दावा है कि उनका धर्म ही सच्चा धर्म है। आखिर सच्चाई क्या है? कौनसा धर्म सत्य है? मैं सच को तलाशना चाहता था।' वे सच को तलाशने में जुट गए और आखिर में उन्होंने अपना ध्यान दुनिया के चार बड़े धर्मों पर केंद्रित किया। उन्होंने अपने स्तर पर पवित्र कुरआन की एक कॉपी जुटाई और पढ़ने लगे आखिर इसमें क्या है? वेपॉपो कहते हैं- मैंने कुरआन की सूरा अखलास पढ़ी-
***कहो, 'अल्लाह एक ( और अद्वितीय ) है, अल्लाह ही सबका आधार है, उसका कोई आधार नहीं। न कोई उससे जन्मा और न वह किसी से जन्मा। और न कोई उसके बराबर है।'***
इस सूरत ने पहली बार मेरे दिल में अनजाने में ही इस्लाम का बीज रोपित कर दिया। कुरआन का अध्ययन करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कुरआन ही एकमात्र धार्मिक ग्रंथ है जो अपने अवतरण काल से लेकर अब तक बिना किसी छेड़छाड़ के इंसानों के बीच मौजूद है। वे कहते हैं, 'जब मैं डॉक्टरेट कर रहा था तो मैंने अपनी थिसिस के निष्कर्ष में भी इस बात का जिक्र किया है। मैंने इस बात की परवाह नहीं की थी कि कुरआन के बारे में इस तरह लिखने पर मुझे डॉक्टरेट की उपाधि दी जाएगी या रोक ली जाएगी। दरअसल उस वक्त मैं सच की तलाश में जुटा था और मेरी नजर में यही सच्चाई थी।
एक दिन उन्होंने अपने प्रिय प्रोफेसर वेन बर्जर से इस संबंध में बात की। वेपॉपो कहते हैं-

'मैंने कमरे का दरवाजा बंद किया, उनकी आंखों में आंखें डालकर पूछा- दुनिया के सभी धर्मों में सच्चा धर्म कौनसा है?
'इस्लाम' उन्होंने जवाब दिया।
'फिर आपने अब तक इस्लाम क्यों नहीं अपनाया?' मैंने उनसे आगे पूछा। उन्होंने मुझे बताया-'इसकी पहली वजह तो यह है कि मैं अरब लोगों से नफरत करता हूं और दूसरी वजह है मेरी ऐशो-आराम की यह जिंदगी जो तुम देख रहे हो। क्या में इस्लाम की खातिर ऐशो आराम की इस जिंदगी को छोड़ दूं?
वेपॉपो बताते हैं-'उनके इस जवाब पर जब मैंने अपने रुतबे पर गौर किया तो मुझे भी लगा कि मेरी जिंदगी भी तो कमोबेश ऐसी ही ही है। मैं भी तो ऐशो आराम की जिंदगी गुजर-बसर कर रहा हूं। उन्हें अपना मिशन और कारें कल्पना में दिखाई दी और बोल उठा-नहीं वह इस्लाम अपनाकर इन सब ऐशो-आराम को नहीं छोड़ सकता! और उन्होंने एक साल के लिए इस्लाम के बारे में सोचना ही बंद कर दिया।' लेकिन इस बीच उन्हें सपने दिखाई देने लगे जिसमें उन्हें कुरआन की आयतें और सफेद पोशाक पहने हुए लोग नजर आते। खासतौर पर शुक्रवार के दिन उनको ये सपने आते। ऐसे में आखिर 22 दिसंबर को उन्होंने इस्लाम अपना लिया।
वे कहते हैं, मुझे जो सपने दिखाई दिए वे कोई अंधविश्वास की वजह से नहीं थे जैसा कि अफ्रीकी लोगों के सपने होते हैं। मैं इस बात में यकीन नहीं करता कि सभी सपने बुरे होते हैं। दरअसल इन सपनों ने मुझे सच्ची राह दिखाई, इस्लाम की सच्ची राह पर मुझे चलाया।'
इसका नतीजा यह रहा कि चर्च ने उनसे उनकी गाड़ी और घर छीन लिया। यही नहीं उनकी बीवी को भी उनका इस्लाम अपनाना रास नहीं आया और उसने अपना सामान पैक किया और अपने बच्चों को लेकर घर छोड़ गई। जबकि वेपॉपो ने उसको भरोसा दिलाया था कि वह उस पर इस्लाम अपनाने का किसी तरह का दबाव नहीं डालेगा।'
वेपॉपो याद करते हुए बताते हैं, 'जब मैं अपने माता-पिता के पास गया और उन्होंने मेरे बारे में सुना तो पिताजी ने इस्लाम को भला-बुरा कहा।

मेरी मां ने मुझसे कहा कि क्या तुम मुझसे भी खरी-खोटी सुनना चाहते हो?' और इस तरह वेपॉपो से सब घर वाले अलग हो गए और वे अकेले रह गए। यह पूछने पर कि वे अपने माता-पिता के बारे में अब कैसा सोचते हैं? तो वे बोले-मैंने उन्हें माफ कर दिया। दरअसल पिताजी के दुनिया छोड़ने से पहले उनसे सही संबंध बनाने का मुझे मौका मिल गया था। दरअसल वे बुजुर्ग थे और ज्यादा जानकारी उनके पास नहीं थी। उन्होंने तो बाइबिल भी नहीं पढ़ी थी। वे तो उतना ही जानते जितना पादरियों ने उनको बताया था।'

पिता के घर से वेपॉपो तंजानिया और मालावी की सीमा के बीच स्थित किएला पहुंचे जहां पर उनके परिवार वाले कभी बसा करते थे। बाद में उनके माता-पिता यहां से जाकर किलोसा, मोरगोरो में बस गए थे।

अपने सफर के दौरान वे बुसाले में रुके। वे वहां कैथोलिक नन सिस्टर गेर्टरुडे किबवेया से मिले। जिसने बाद में इस्लाम अपना कर अपना नाम जैनब रखा और वेपॉपो से शादी कर ली। इस नन ने अपनी जिम्मेदारी छोड़ने और इस्लाम अपनाने की सूचना अपने सीनियर्स को दे दी। इस नन ने वेपॉपो की काफी मदद की, उस वक्त भी जब वेपॉपो गंभीर बीमार हो गए थे। किएला पहुंचकर वे अपने बनाए मिट्टी के एक कच्चे घर में रहने लगे। वर्ल्ड काउंसिल ऑफ चर्च का पूर्वी अफ्रीका के महासचिव पद तक पहुंचने वाला वेपॉपो अपनी जीविका चलाने के लिए अब लकड़ियां काटने लगा और लकड़हारे के साथ ही कुछ लोगों की जमीन में तिल की खेती करने लगा। इसी दौरान सार्वजनिक रूप से इस्लाम का प्रचार करने की वजह से वेपॉपो पर ईसाईयत की निंदा करने का आरोप लगाकर कुछ समय का कारावास दिया। वेपॉपो 1988 में हज करने गए तो पीछे से उनके साथ एक हादसा घटित हुआ। उनके घर को बम से उड़ा दिया गया जिसमें उनके तीन मासूम बच्चे मारे गए। वेपॉपो याद करते हुए बताते हैं, 'इस साजिश में एक प्रधान पादरी भी शामिल था जो मेरा रिश्तेदार ही लगता था। दरअसल उसकी मां और मेरी मां एक ही पिता की संतान थी।'

वे बताते हैं कि उनको हतोत्साहित करने के तमाम प्रयासों के बावजूद उस

इलाके में तेजी से इस्लाम फैलने लगा और काफी लोग इस्लाम अपनाने लगे। इन लोगों में उनके ससुर भी शामिल थे। 1992 में उन पर देशद्रोह का इल्जाम लगाकर उन्हें उनके सत्तर अनुयायियों के साथ दस महीने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। दरअसल सुअर के गोश्त की दुकानों के खिलाफ वे काफी कुछ बोले थे और बाद में किसी ने उन्हीं दुकानों को बम से उड़ा दिया था। उनकी दलील थी कि सवैंधानिक रूप से 1913 से ही दारुसलाम, टांगा, माफिया, लिंडी और किगोमा में बार, क्लब और सुअर के गोश्त पर पाबंदी लगी हुई है। रिहाई के बाद वेपॉपो जाम्बिया चले आए क्योंकि किसी ने उनको सलाह दी कि वे यहां से चले जाएं क्योंकि यहां उनकी हत्या करने की साजिश रची जा रही है।

वेपॉपो बताते हैं जिस दिन उन्हें रिहा किया गया, उसी दिन उन्हें फिर गिरफ्तार करने पुलिस घर पर आई लेकिन वहां के लोगों ने इसका विरोध किया और कहा कि ऐसा करने पर वे प्रदर्शन करेंगे। यहां से जाम्बिया निकलने में उनकी बीवी ने काफी मदद की और साहस का परिचय दिया।

अलहज्ज अबूबक्र वेपॉपो का मुसलमानों को संदेश है- दुनियाभर में इस्लाम के खिलाफ जंग छिड़ी हुई है। इसके खिलाफ जमकर साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है और बांटा जा रहा है। मुसलमानों को कट्टरपंथी की संज्ञा देकर उन्हें शर्मिंदा किया जा रहा है। मुसलमानों को अब बिखरे रहने और अपने-अपने हाल में मस्त रहने के बजाय सामूहिक प्रयास करने चाहिए। अगर तुम अपनी हिफाजत चाहते हों तो तुम्हें अपने पड़ोसी की सुरक्षा करनी होगी। वे कहते हैं, मुसलमानों को साहसी बनना होगा। साहस के साथ इस्लाम को पेश करना होगा।

# इब्राहीम कोआन

## मलेशिया

***मैंने साठ साल की उम्र तक एक प्रोटेस्टेंट ईसाई की हैसियत से अपनी जिंदगी गुजारी और उस दौरान तकरीबन तीन साल तक मलेशिया के कुवालालीप्स के चर्च में पादरी के रूप में अपनी सेवाएं दीं। और फिर आखिर में मैं इस्लाम की आगोश में आ गया।***

*कुरआन में कितनी ही ऐसी बातें हैं जिनकी पुष्टि बाइबिल भी करती है जैसे खुदा का आज्ञापालन, भाईचारगी व बराबरी, मरने के बाद जिंदा होना और परलोक पर यकीन। मेरा मानना है कि सही मायनों में हजरत ईसा अलै. पर ईमान मैं मुसलमान बनने के बाद लाया हूं बजाय उस दौर के जब मैं ईसाई था।*

**इब्राहीम कोआन**

# इस्लाम में सुकून और चैन

मैंने साठ साल की उम्र तक एक प्रोटेस्टेंट ईसााई की हैसियत से अपनी जिंदगी गुजारी और उस दौरान तकरीबन तीन साल तक मलेशिया के कुवालालीप्स के चर्च में पादरी के रूप में अपनी सेवाएं दीं। और फिर आखिर में मैं इस्लाम की आगोश में आ गया। आज मैं खुशी के साथ वे बातें बयान करूंगा जो मेरे इस्लाम कुबूल करने का कारण बनीं।

मैं 3 फरवरी को 1907 ई को पैदा हुआ। मेरे माता-पिता बुद्ध मत से संबंध रखते थे। छह साल की उम्र में मुझे एक चीनी स्कूल में दाखिल कराया गया जहां मैंने कन्फूशस धर्म की एक बुनियादी किताब 'चेहार  कुतुब' और दूसरी कई किताबें पढ़ीं जिनसे प्रभावित होकर मैं कन्फूशस मत के एक ईश्वर की अवधारणा से बेहद प्रभावित हुआ और मैं इस मत का कायल हो गया।

मेरी उम्र नौ साल थी जब मैं कुवालालम्पुर के विक्टोरियाा इन्सटीट्यूशन में अंग्रेजी की शिक्षा हासिल करने लगा। यहीं से मैंने बाइबिल का थोड़ा-थोड़ा अध्ययन किया और ईसाई धर्म अपना लिया। मेरी उम्र उस वक्त सोलह-सत्रह साल के करीब थी।

1963 ई. में जबकि मैं कुवालालीप्स के चर्च में पादरी बनकर जाने ही वाला था मेरे एक हिन्दुस्तानी दोस्त के.के. मुहम्मद ने मुझे अंग्रेजी में अनुवादित कुरआन पाक दी। मैंने कुरआन का अध्ययन किया और उसके विषय और अंदाज से प्रभावित हुआ। हालांकि उस वक्त यह प्रभाव इतना ज्यादा न था  कि मैं इस्लाम अपना लेता।

कुवालालीप्स में ईसाईयत का प्रचार करने के दौरान यह देखकर मुझे

बेहद दुख होता और मेरा जहन यह महसूस करके झनझना उठता कि प्रोटेस्टेंट चर्च की कितनी ही शाखाएं हैं और धार्मिक विश्वास के आधार पर हर शाखा दूसरी से टकराव के लिए तैयार रहती है। आप शायद यह भी जानते हों कि प्राटेस्टेंट और कैथोलिक फिरकों में दूरी और विरोधाभास के क्या हालात हैं और उनकी आस्था आपस में कितनी भिन्न है। इन सब हालात से मैं बेहद परेशान हुआ और फिर इन्हीं हालात के बीच मैंने कुरआन का अध्ययन करना शुरू किया। कुरआन की जिन आयतों ने मुझे राह दिखाई वे ये हैं–

***'उसने आप पर ( ऐ नबी ) यह किताब उतारी जो हक लेकर आई है और उन किताबों की पुष्टि कर रही है जो पहले से आई हुई थी। इससे पहले वह इंसानों की हिदायत के लिए तौरात और इंजील अवतरित कर चुका है।' ( आल इमरानः 3 )***

***'ऐ नबी कह दीजिए कि हम अल्लाह को मानते हैं। उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गई है। उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इब्राहीम, इस्माईल, याकूब और याकूब की औलाद पर अवतरित हुई थी और उन हिदायात पर भी ईमान रखते हैं जो मूसा और ईसा और दूसरे पैगम्बरों को उनके रब की तरफ से दी गई। हम उनके दरमियान फर्क नहीं करते और हम अल्लाह के फरमाबरदार ( मुस्लिम ) हैं।' ( आल इमरानः 84 )***

कुरआन के लगातार और गहरे अध्ययन ने मुझे सच्चाई के करीब कर दिया और ईसाईयत के विश्वास का खोखलापन मुझ पर जाहिर होता गया। उदाहरण के तौर पर ट्रिनिटी का विश्वास ऐसा विश्वास है जिसको हर ईसाई समझे बिना अपना लेता है। इसके विपरीत इस्लाम एकेश्वरवाद का ऐसा स्पष्ट और आम लोगों को समझने वाला मत रखता है। यानी अल्लाह एक है, उसकी बड़ाई में कोई शरीक नहीं है। उसके सिवाय कोई पूजनीय नहीं और मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के आखरी रसूल (दूत) हैं। मेरे नजदीक इस्लाम और ईसाईयत में यही फर्क का कारण है।

ईसाईयत और इस्लाम के गहरे अध्ययन ने मुझे संतुष्ट कर दिया और मैंने

दिल से इस्लाम को अपना लिया और एक सच्चे मुसलमान की तरह इस्लामी उसूलों के मुताबिक जिंदगी गुजारने लगा। इस्लाम ने मुझे सिखाया कि मैं गरीबों और जरूरतमंदों की परेशानियों को समझूं और उनकी मदद करने में किसी तरह की कौताही ना बरतूं। मैं अपने आपको खुशकिस्मत समझता हूं। जो कुछ ईश्वर ने मुझे दिया उस पर मैं खुश हूं और उसके रहमो करम का शुक्रिया अदा करता हूं।

मैं यहां यह बात कहना जरूरी समझता हूं कि कुरआन में कितनी ही ऐसी बातें हैं जिनकी पुष्टि बाइबिल भी करती है जैसे खुदा का आज्ञापालन, भाईचारगी व बराबरी, मरने के बाद जिंदा होना और परलोक पर यकीन। मेरा मानना है कि सही मायनों में हजरत ईसा अलै. पर ईमान मैं मुसलमान बनने के बाद लाया हूं बजाय उस दौर के जब मैं ईसाई था।

इस्लाम की जिन बातों ने मुझे प्रभावित किया वे हैं–

इस्लाम ईसाईयत के मुकाबले में कहीं ज्यादा समझ में आने वाला, अमल किए जाने वाला और सीधा, सरल और सादा मजहब है।

इस्लाम की इबादतें बंदे को सीधा ईश्वर से जोड़े रखती हैं।

इस्लाम में ईश्वरीय अवधारणा आसान, मजबूत और असर छोड़ने वाली है।

इस्लाम की इबादत में सुकून और चैन हासिल होता है, जिंदगी का खालीपन दूर होता है जबकि ईसाई इबादत में अधूरेपन का एहसास होता है।

कुरआन की शिक्षा के मुताबिक मुसलमान पहले के पैगम्बरों पर अवतरित किताबों पर यकीन रखते हैं और वे मानते हैं कि वे अल्लाह की तरफ उन पैगम्बरों पर अवतरित हुई थी लेकिन अब उनमें कई तरह के बदलाव आ गए हैं, वे अपने मूल रूप में मौजूद नहीं है जबकि कुरआन इतने सालों बाद भी अपने मूल रूप में मौजूद है और यह पहले की किताबों और पैगम्बरों की पुष्टि करता है।